आज से नवरात्र प्रारंभ

दैनिक

भास्कर दूत

हर ख़बर पर नज़र

दिल में छत्तीसगढ़

रायपुर एवं राजनांदगांव से एक साथ प्रकाशित

डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/68/2022-24

web- www. bhaskardoot.com

-: सुविचार :-

उत्साह बीते कल से सीखो
आज के लिए जियो और आने
वाले कल से आशा रखो।

◆ वर्ष-11 ◆ अंक - 263 रायपुर एवं राजनांदगांव से एक साथ प्रकाशित ◆ RNI-CHHHIN/2014/55697 ◆ रायपुर, गुरुवार 03 अक्टूबर 2024 ◆ पृष्ठ-8 ◆ मूल्य - 02 रुपये

उप मुख्यमंत्री अरुण साव बिलासपुर से नई दिल्ली और भटगांव में आयोजित कार्यक्रमों में वर्चुअली जुड़े

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से भटगांव जल प्रदाय योजना का किया शिलान्यास

भास्कर दूत

रायपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज गांधी जयंती पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सूरजपुर जिले के भटगांव नगर पंचायत के लिए 56 करोड़ 78 लाख रुपए की लागत की जल प्रदाय योजना का शिलान्यास किया। अमृत मिशन 2.0 के तहत स्वीकृत इस जल प्रदाय योजना का काम अगले दो वर्षों में पूर्ण होगा। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव बिलासपुर से नई दिल्ली और भटगांव में आयोजित कार्यक्रमों में वर्चुअली शामिल हुए। उनके साथ बिलासपुर से विधायक श्री धरमलाल कौशिक, श्री धर्मजीत सिंह, श्री सुशांत शुक्ला और जिला पंचायत के अध्यक्ष श्री अरुण सिंह चौहान भी दोनों जगहों में आयोजित कार्यक्रमों से ऑनलाइन जुड़े।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के वर्चुअल उद्घाटन के बाद उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने भी भटगांव में मौजूद लोगों को वर्चुअली सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि इस नई जल प्रदाय योजना के प्रारंभ होने के बाद भटगांववासियों की पेयजल की समस्या दूर होगी। महान नदी के पानी को साफ कर घरों तक पहुंचाया जाएगा। योजना के पूर्ण होने के बाद भटगांव के लोगों को राष्ट्रीय मानक के अनुरूप 135 लीटर जल प्रति व्यक्ति प्रतिदिन उपलब्ध हो सकेगा। श्री साव ने कहा कि हमने ही छत्तीसगढ़ राज्य को बनाया है और इसके विकास की जिम्मेदारी भी हमारी है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को उच्च गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में योजना से जुड़े सभी निर्माण कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिए।

दो एमएलडी क्षमता का जल शोधन संयंत्र बनेगा, 64 किलोमीटर वितरण पाइपलाइन से 3586 नल कनेक्शन दिए जाएंगे

मिशन अमृत 2.0 के तहत स्वीकृत 56 करोड़ 78 लाख रुपए लागत की इस जल प्रदाय योजना में महान नदी के गोंडा एनीकट में इंटेकवेल का निर्माण कर पेयजल भटगांव पहुंचाया जाएगा। एनीकट से रॉ-वॉटर पाइपलाइन के माध्यम से सतही जल को योजना के अंतर्गत प्रस्तावित जल शोधन संयंत्र में शुद्ध कर स्वच्छ पेयजल भटगांव शहर को उपलब्ध कराया जाएगा। वर्तमान में भटगांव शहर में प्रति व्यक्ति 49 लीटर जल प्रतिदिन उपलब्ध हो रहा है। भटगांव की इस नई जल प्रदाय योजना के शुरू होने के बाद वहां प्रति व्यक्ति 135 लीटर प्रतिदिन पेयजल उपलब्ध कराया जा सकेगा। भटगांव जल प्रदाय योजना के अंतर्गत दो एमएलडी क्षमता के जल शोधन संयंत्र, कुल 750 किलो लीटर क्षमता के तीन उच्च स्तरीय जलागार, 64 किलोमीटर की वितरण पाइपलाइन तथा कुल 3586 निजी नल कनेक्शन प्रदान किए जाएंगे। विगत अगस्त माह में इसके लिए कार्यादेश जारी किया जा चुका है। योजना का काम आगामी 24 महीनों में पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है।

बाढ़ ने आधे बिहार को डुबोया, ना खाने की रोटी और ना पीने का पानी

10 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित, सेना ने संभाला मोर्चा, दरभंगा-पूर्णिया से लेकर सहरसा से आई बर्बादी की तस्वीरें

पटना। बिहार में बाढ़ से हाहाकार मचा हुआ है। नेपाल में हो रही भारी बारिश के पानी से आधा बिहार (नार्थ बिहार) डूबा हुआ है। बिहार की कई नदियां उफान पर हैं। 16 जिलों के करीब 10 लाख आबादी बाढ़ से प्रभावित है। सब कुछ डूब गया है। ना खाने का ठिकाना है। ना पीने का पानी है। जो बीमार हैं वो दवा के लिए तरस गए हैं। पूर्णिया, सहरसा, सुपौल, दरभंगा में हालात बेहद खराब हैं। बाढ़ के बीच अब वायुसेना की मदद ली जा रही है। एयरफोर्स की मदद से बाढ़ प्रभावित इलाकों में लोगों तक हेलिकॉप्टर से फूड के पैकेट्स पहुंचाए जा रहे हैं। पिछले 24 घंटे में दरभंगा से लेकर सहरसा जैसे नए इलाकों में बाढ़ का पानी फैल गया है। अब तक 16 जिलों में 10 लाख से ज्यादा लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। सबसे ज्यादा पश्चिमी चम्पारण, अररिया, किशनगंज, गोपालगंज, शिवहर, सीतामढ़ी, सुपौल, मधेपुरा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, सारण, सहरसा और कटिहार जिले बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। इन जिलों के 76 प्रखंडों के 368 पंचायतों में बाढ़ का पानी फैल चुका है। यहां आम लोगों का जनजीवन पटरी से उतर गया है। यह संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दरअसल, बिहार में कुल 38 जिले हैं और पिछले 2 दिनों से आधे जिलों में 10 लाख लोग बाढ़ के पानी से जंग लड़ रहे हैं। सब कुछ डूब गया है। ना खाने की रोटी है. ना पीने का पानी। जो बीमार हैं वो दवा के लिए तरस गए हैं। बच्चे-बुजुर्ग-महिलाएं, क्या इंसान, क्या मवेशीज बाढ़ ने भयानक तबाही मचाई है।

नेपाल ने कोसी-गंडक में इतना अधिक पानी छोड़ा की मच गई तबाही

सरकार का कहना है कि नेपाल में 70 घंटे की बारिश के बाद कोसी-गंडक में इतना पानी छोड़ दिया गया कि तबाही मच गई। उत्तरी बिहार में 24 घंटे के अंदर 4 जिलों में 7 तटबंध टूट चुके हैं। 55 प्रखंडों के 270 गांव पूरी तरह डूबे हुए हैं। आम जनता का सवाल यही है कि आखिर बिहार की बाढ़ वाली समस्या का क्या कोई समाधान नहीं है? आखिर आज तक किसी पार्टी और सरकार ने बिहार को बाढ़ से बचाने में दिलचस्पी क्यों नहीं दिखाई? आजादी के 70-80 साल बाद भी बिहार में बाढ़ की त्रासदी रोकने के लिए कोई ठोस उपाय क्यों नहीं किए गए।

समाचार शीर्ष

ग्रामीणों को GPS ट्रैकर और कैमरे से लैस मिला गिद्ध

साजिश या सुरक्षा! जांच का विषय

बीजापुर। बीजापुर और तेलंगाना के बॉर्डर पर ग्रामीणों को जीपीएस ट्रैकर और कैमरे से लैस गिद्ध मिला है। तेलंगाना राज्य के चेरला इलाके में थकान के कारण गिद्ध उतरा था। एकलव्य स्कूल के पास GPS ट्रैकर और कैमरा से लैस गिद्ध दिखाई दिया। जानकारी नहीं होने के कारण ग्रामीणों ने थके हुए गिद्ध को मांस और रोटी खिलाई और उसके बाद छोड़ दिया। बताया जा रहा है कि ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को नहीं दी। लेकिन नक्सल प्रभावित इलाके में तेलंगाना और बीजापुर की सीमा पर जीपीएस ट्रैकर और कैमरे से लैस गिद्ध मिलने से संशय की स्थिति है। गिद्ध जैसे पक्षियों पर जासूसी करने के लिए कैमरे और ट्रैकर लगाए जाते हैं। इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण के लिए भी प्रयोग किया जाता है। अब यह जांच की विषय है कि गिद्ध पर किस इरादे से यह उपकरण लगाया गया है।

रायपुर आ रही ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर

भास्कर दूत

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य 27वीं अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता 2024 का गौरवपूर्ण मेज़बान बनने जा रहा है। इस प्रतिष्ठित खेल प्रतियोगिता का आयोजन भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तत्वावधान में रायपुर में 16 से 20 अक्टूबर 2024 तक आयोजित किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के लिए यह आयोजन एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो राज्य की खेल प्रतिभाओं और वन विभाग के उत्कृष्ट प्रयासों को प्रदर्शित करेगा। इस खेल महोत्सव में देशभर से वन विभाग के खिलाड़ी विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेंगे। प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण 20 अक्टूबर को आयोजित समापन समारोह में पेरिस ओलंपिक 2024 की पदक विजेता और विश्वप्रसिद्ध निशानेबाज मनु भाकर की उपस्थिति होगी, जो खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाएंगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और वन मंत्री केदार कश्यप के नेतृत्व में राज्य की तैयारियां जोर-शोर से चल रहीं है। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री व्ही. श्रीनिवास राव एवं नोडल अधिकारी श्रीमती शालिनी रैना के निर्देशन में राज्य के खिलाड़ी पेशेवर कोचों की देखरेख में कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

सद्गुरु के ईशा फाउंडेशन आश्रम पर 150 पुलिस अधिकारियों ने मारी रेड

त्रिवेंद्रम। आध्यात्मिक गुरु जग्गी वासुदेव उर्फ सद्गुरु के ईशा फाउंडेशन आश्रम पर मंगलवार को 150 पुलिस अधिकारियों ने रेड मारी। ये कार्रवाई उस परिपेक्ष्य में मारी गई है, जिसमें मद्रास हाई कोर्ट ने पुलिस को आध्यात्मिक गुरु जग्गी वासुदेव के ईशा फाउंडेशन के खिलाफ दर्ज सभी क्रिमिनल केस की जानकारी देने का निर्देश दिया था। रिपोर्ट के मुताबिक, मंगलवार को 3 DSP समेत 150 पुलिसकर्मियों ने आश्रम में तलाशी ली। पुलिस ने आश्रम में रहने वाले लोगों और कमरों की जांच की।

कांग्रेस को न्याय नहीं क्षमा यात्रा निकालनी चाहिए- मुख्यमंत्री

भास्कर दूत

रायपुर। कांग्रेस की छत्तीसगढ़ न्याय यात्रा का समापन बुधवार को गांधी मैदान रायपुर में हुआ. यह यात्रा 27 सितंबर को गिरौदपुरी से शुरू हुई थी और 125 किलोमीटर की दूरी तय की गई. समापन कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रभारी सचिन पायलट, पीसीसी चीफ दीपक बैज, पूर्व सीएम भूपेश बघेल समेत अन्य नेता शामिल होंगे. कांग्रेस की न्याय यात्रा पर सीएम विष्णुदेव साय ने बयान दिया है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस को 'क्षमा यात्रा' निकालनी चाहिए.

सीएम साय ने कहा, 2018 के विधानसभा चुनाव में जो वादे कांग्रेस ने किए थे, उनमें से एक भी वादा पूरा नहीं कर पाए. इसी कारण 2023 के विधानसभा चुनाव में जनता ने उन्हें आउट कर दिया. उन्होंने आगे कहा पिछले 5 साल कांग्रेस ने जो छत्तीसगढ़ का विकास रोका और प्रदेश की जनता के साथ विश्वासघात किया, इसलिए कांग्रेस को क्षमा यात्रा निकालनी चाहिए.

न्याय यात्रा का समापन

अगर सरकार सचेत नहीं हुई, तो पूरे राज्य में संग्राम होगा- सचिन पायलट

रायपुर। कांग्रेस की छत्तीसगढ़ न्याय यात्रा समापन कार्यक्रम में शामिल होने छत्तीसगढ़ पहुंचे प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट ने बीजेपी सरकार पर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा कि सरकार अगर सचेत नहीं हुई तो कांग्रेस राज्यभर में संग्राम छेड़ेगी. उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस ने शौक में नहीं मजबूरी में न्याय यात्रा निकाल रही है. प्रदेश में अशांति, अराजकता का माहौल है. डर में लोग जी रहे हैं, हिंसक घटनाएं हो रही है. मात्र 9 महीनों में ही सरकार फेल हो गई है. उन्होंने आगे कहा कि यह सरकार सुशासन वाली नहीं, बल्कि लोकतंत्र को खत्म करने वाली सरकार है।

गांधी जयंती पर सीएम साय की बड़ी घोषणा,

खादी वस्त्रों की खरीदी पर मिलेगी 25 प्रतिशत की सब्सिडी

रायपुर। गांधी जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने खादी को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण घोषणा की है. उन्होंने कहा कि 2 अक्टूबर से खादी वस्त्र खरीदने पर 25 प्रतिशत की सब्सिडी मिलेगी, जो 31 मार्च 2025 तक जारी रहेगी. यह घोषणा मुख्यमंत्री ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024-स्वच्छता पखवाड़ा समापन समारोह एवं खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में की.कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से चर्चा करते हुए सीएम विष्णुदेव साय ने धान खरीद को लेकर भी जानकारी दी. उन्होंने कहा कि इंद्रदेव इस बार खुश नजर आ रहे हैं और प्रदेश में अच्छी वर्षा हुई है. धान की अच्छी पैदावार होने की संभावना है।

पीएससी प्रीलिम्स के पुनर्मूल्यांकन की याचिका हाई कोर्ट ने इस आधार पर कर दी खारिज, 40 परीक्षार्थियों ने लगाई थी गुहर

पीएससी 2023 की प्रारंभिक परीक्षा के नतीजों को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट में याचिका लगाई गई थी। 40 परीक्षार्थियों ने पुनर्मुल्यांकन की मांग की थी। जिसे हाई कोर्ट ने खारिज कर दी है

भास्कर दूत

बिलासपुर। पीएससी 2023 की प्रारंभिक परीक्षा के नतीजों में पुनर्मुल्यांकन की मांग करते हुए लगाई गई 40 याचिकाओं को हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया है। पीएससी 2023 के नतीजे घोषित होने के बाद 40 विद्यार्थियों ने पांच सवालों को लेकर पीएससी के निर्णय को गलत बताते हुए याचिका लगाई थी। जिसमें हाई कोर्ट की सिंगल बेंच ने महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए कहा है कि सहानुभूति पुनर्मुल्यांकन के निर्देश देने का आधार नहीं हो सकता। परीक्षार्थी परीक्षा की तैयारी के लिए जितनी मेहनत करते हैं उतनी ही मेहनत अधिकारी भी परीक्षा आयोजित करने के लिए करते हैं। इसके साथ ही सभी 40 परीक्षार्थियों की याचिकाएं खारिज कर दी गई।

पीएससी ने राज्य सिविल सेवा के पदों पर भर्ती के लिए 29 नवंबर 2023 को विज्ञापन जारी किए थे। इसके बाद 11 फरवरी 2024 को दो पालियों में प्रारंभिक परीक्षा ली गई थी। परीक्षा के बाद मॉडल आंसर जारी किए गए थे। दावा आपत्ति मंगाने के बाद पीएससी ने संशोधित मॉडल आंसर जारी किए संशोधित मॉडल आंसर के आधार पर प्रारंभिक परीक्षा के परिणाम घोषित किए गए।

एनडीपीएस एक्ट के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ समापन

रायपुर। पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज, रायपुर के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में एन.डी.पी.एस. एक्ट विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 30.09.2024 एवं 01.10.2024 को कार्यालय अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात सभागार कालीबाड़ी रायपुर में आयोजित किया गया जिसमें रायपुर, दुर्ग एवं राजनांदगांव रेंज के पुलिस अधिकारीगण सम्मिलित हुए।

यह प्रशिक्षण भारत सरकार, गृह मंत्रालय के अधीन नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से दिया गया, जिसमें मुख्य रूप से एन.सी.बी. के संयुक्त निदेशक रितेश रंजन, सहायक निदेशक रविशंकर जोशी तथा अधीक्षक अनिल कुमार ने ड्रग्स के प्रकार, नशीले पदार्थों का वर्गीकरण, इस संदर्भ में फायनेंशियल (आर्थिक) अन्वेषण, इसका निष्प्रयोजन, जप्ती एवं संकलन की कार्यवाही पिट एन.डी.पी.एस. एक्ट की कार्यवाही तथा इससे संबंधित सभी तथ्यों पर व्याख्यान दिया।

सर्वप्रथम एन.सी.बी. के असिस्टेंट डायरेक्टर रविशंकर जोशी ने दो दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिये गये प्रशिक्षण के संबंध में माननीय पुलिस महानिरीक्षक को अवगत कराते हुए बताया कि नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के व्याख्यानकर्ताओं ने दुर्ग, राजनांदगांव, रायपुर रेंज के राजपत्रित एवं अराजपत्रित अधिकारियों की उपस्थिति में एनडीपीएस एक्ट की सभी धाराओं पर किस प्रकार प्रभावी कार्यवाही की जावे इस पर दिशा-निर्देश के अनुरूप कार्यवाही की प्रक्रिया को स्पष्ट किया। राजपत्रित अधिकारियों एवं निरीक्षक, उपनिरीक्षक एवं सहायक उपनिरीक्षक के द्वारा एनडीपीएस की विवेचना में मैदानी स्तर पर होने वाली परेशानियों से अवगत कराते हुए प्रक्रिया का पालन किस प्रकार किया जावे इस विषय पर व्याख्यानकर्ताओं ने एन.डी.पी.एस. एक्ट की धाराओं की विस्तृत व्याख्या करते हुए की जाने वाली कार्यवाही के संबंध में समाधान किया।

पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज, रायपुर के द्वारा समापन कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रशिक्षणार्थियों में से 05-05 अधिकारियों से नारकोटिक्स विषय पर की जाने वाली कार्यवाही, प्रशिक्षण में बतायी गयी प्रक्रियाओं से प्राप्त होने वाली सहायता तथा उनके सुझाव सहित इस प्रशिक्षण का फिड बैंक प्रश्नोत्तर के माध्यम से जाना। यह फिड-बैंक प्रश्नोत्तर के माध्यम से रायपुर, दुर्ग एवं राजनांदगांव रेंज से आये 12 जिलों से सम्मिलित 87 पुलिस अधिकारियों से लगभग आधे घण्टे तक संवाद किया गया, जिसमें आये समस्या एवं सुझाव का समाधान करने के पश्चात पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज, रायपुर द्वारा अपने उद्धबोधन में बताया कि समाज में अपराध का बढ़ने का सबसे महत्वपूर्ण कारण नशा है, किसी भी अपराध में नशा किये हुए व्यक्ति द्वारा किया गया अपराध सामान्य से ज्यादा गंभीर होता है। समाज में अपराध को कम करने के लिए सबसे प्रभावी एजेंसी पुलिस है, इसलिए हम सभी को नशे पर प्रभावी कार्यवाही करने के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा।

हमारी कार्यवाही ऐसी हो कि अपराधी दोष मुक्त न हो। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी फिड बैंक में इस महत्वपूर्ण विषय पर इस दो दिवसीय कार्यशाला को अत्यंत उपयोगी बताते हुए इससे प्राप्त जानकारी से भविष्य में एन.डी.पी.एस. की कार्यवाही में दोष सिद्धियों में बेहतर परिणाम आयेंगे ऐसा विश्वास दिलाया।

कार्यक्रम के अंत में पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज, रायपुर के द्वारा एन.सी.बी. के व्याख्यानकर्ताओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रशिक्षण का संचालन द्विवेदी, उप पुलिस अधीक्षक लाईन रायपुर द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण में पुलिस महानिरीक्षक कार्यालय रायपुर से ए.एस.पी. चंचल तिवारी, कौशलेंद्र सिंह एवं उप पुलिस अधीक्षक आशीष शुक्ला ने समन्वय किया।

बिलासपुर व रायपुर के अस्पतालों में अव्यवस्था, शासन ने जवाब के लिए मांगा समय

भास्कर दूत

रायपुर। जिला अस्पताल बिलासपुर और आंबेडकर हास्पिटल रायपुर में मरीजों के उपचार में लापरवाही को लेकर हाई कोर्ट द्वारा स्वत: संज्ञान मामले में सोमवार को शासन ने डिवीजन बेंच से विस्तृत जवाब पेश करने के लिए समय लिया। इसे मंजूर कर हाई कोर्ट ने तीन सप्ताह का समय प्रदान किया है। अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में अगली सुनवाई हो सकती है।

जिला अस्पताल बिलासपुर में स्थापित आक्सीजन प्लांट शुरू ही नहीं किया जा रहा है, जिससे मरीजों की जान खतरे में पड़ जाती है। अस्पताल प्रबंधन द्वारा तरह-तरह के बहाने बनाए जा रहे हैं, लेकिन भारी भरकम खर्च करके लगाए गए आक्सीजन प्लांट को चालू करने का प्रयास नहीं किया गया है। वहीं, रायपुर के डा. भीमराव अंबेडकर स्मृति अस्पताल से जुड़ी अव्यवस्था को लेकर मीडिया में खबर प्रकाशित की गई थी। रविवार को ओपीडी बंद रहने और आपातकालीन स्थिति में डाक्टर सिर्फ काल पर ही ड्यूटी करने की जानकारी दी गई थी। अस्पताल को सिर्फ मेडिकल स्टाफ के सहारे छोड़ दिया गया है। जब भी छुट्टी होती है तो स्वास्थ्य केंद्र को इमरजेंसी मोड पर छोड़ दिया जाता है, मरीजों को छोटी-मोटी बीमारियों के लिए भी दवा नहीं मिलती। जिला अस्पताल में ओपीडी कक्षों में ताले लगेरहते हैं। इस तरह की व्यवस्था के कारण मरीजों को परेशानी उठानी पड़ती है। मामले की सुनवाई के बाद कोर्ट ने अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण से व्यक्तिगत शपथपत्र मांगा था। सोमवार को शासन की ओर से विस्तृत जवाब पेश करने समय देने का अनुरोध किया गया, इसे कोर्ट ने मंजूर कर लिया है, अगली सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी।

गांधी जी भगवान राम के परम भक्त थे -राजेश्री महन्त जी

गांधी जयंती के अवसर पर गांधी भवन जैतु साव मठ में कार्यक्रम आयोजित

भास्कर दूत

रायपुर। महात्मा गांधी जी के जयंती के अवसर पर गांधी भवन जैतु साव मठ पुरानी बस्ती रायपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। शुभारंभ गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप जलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि राजेश्री महन्त रामसुन्दर दास जी महाराज ने इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि- महात्मा गांधी जी भगवान राम के परम भक्त थे वे जहां भी किसी भी सभा में जाते थे उसकी शुरुआत रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम गायन करके करते थे। कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय में गोली लगने के पश्चात -हे राम! कहकर अपने प्राण का त्याग किया था! वे परम वैष्णव थे। उनका प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे! सभी सनातन धर्मावलंबियों के बीच बहुत ही लोकप्रिय है। मठ के सचिव महेंद्र अग्रवाल जी ने गांधी जी का स्मरण करते हुए कहा कि -गांधी जी का पदार्पण जैतू साव मठ में दो बार हुआ था उन्होंने समाज सुधार एवं भारतवर्ष को आजाद कराने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया। लोगों को प्रोफेसर किशोर अग्रवाल ने भी संबोधित किया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर भारतवर्ष के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को भी याद किया गया। कार्यक्रम का संचालन अजय तिवारी ने की, इस अवसर पर विशेष रूप से सुरेश शुक्ला, बसंत शर्मा, प्रोफेसर उज्जवल ठाकुर, धनेंद्र मुंशी, दीपक पाठक, निर्मल दास वैष्णव सहित अनेक गणमान्य नागरिक गण उपस्थित थे।

राजेंद्र नगर में चाकू लेकर घूमते बदमाश गिरफ्तार

भास्कर दूत

रायपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह के दिशा निर्देश पर एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डी. आर पोर्ते के मार्गदर्शन में तथा नगर पुलिस अधीक्षक (पुरानी बस्ती) रायपुर के पर्यवेक्षण थाना प्रभारी न्यू राजेन्द्र नगर के नेतृत्व में चाकूबाज के आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल। मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि उक्त आरोपी अपने पास लोहे का धारदार नुकीले चाकू लेकर लहराते हुए पाए जाने पर गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। नाम आरोपी:- लक्ष्मण छुरा पिता चितरू उम्र 35 वर्ष साकिन शहीद राजीव पांडे नगर थाना न्यू राजेंद्र नगर जिला रायपुर।

सार समाचार

उच्च क्षमता की लेजर लाईट आंखों के लिए नुकसानदायक: डॉ प्रांजल मिश्र

रायपुर। अस्पताल आया जो झांकी में शामिल हुआ था और जुलुस में जो लेजर लाइट चल रहीं थी, उस लेजर लाईट के आंख में पड़ने के बाद उसकी एक आंख की नजर कमजोर होने की शिकायत की , जब उसकी आंखो की जांच की तब पाया गया कि उसकी बांई आंख से कम दिख रहा है जबकि दाहिनी आंख की नजर ठीक है . जब उसकी आंखों के पर्दे की जांच की गई तब यह देखा गया कि उसकी आंखों के परदे में जो रक्त वाहिका है वह क्षतिग्रस्त हो गई है। मेडिकल कॉलेज रायपुर के नेत्र एवम रेटिना विशेषज्ञ डॉक्टर प्रांजल मिश्र ने जब मरीज की परदे की ओ सी टी की, तब पाया कि उक्त मरीज के परदे की रक्त वाहिका लेजर किरणों के परदे में टकराने से उसमें छिद्र हो गया है और इस जगह से रक्त निकल कर पर्दे में जमा हो गया है। डॉ प्रांजल मिश्र ने जानकारी दी कि इस प्रकार सार्वजनिक कार्यक्रमो में जो लेजर लाइट उपयोग की जाती है वह अत्यधिक तीव्रता की होती है 3ष्ठ 3ङ्क या 4 कैटेगरी में आती है. जबकि एफडीए भी पांच मिली वाट से ज्यादा की लेजर किरणे उपयोग करना निषेध करती है इसमें से ब्लू स्पेक्ट्रम वाली लेजर आंखों को सबसे ज्यादा डैमेज करती है जैसे पर्दे में खून का बहाना और यहां तक की पर्दे में छेद भी हो जाता है कई बार मरीजों को इस बात की जानकारी ही नहीं होती और आंखों की खराब होने की संभावना होती है, इस प्रकार से प्रभावित मरीजों को तुरंत अस्पताल पहुंचना चाहिए ताकि सही समय पर उपचार हो सके. एवम उनकी दृष्टि बचाई जा सके। डॉ दिनेश मिश्र ने बताया हर साल इस प्रकार की घटनाएं होती हैं और ऐसे मरीज आते हैं जो अधिक क्षमता के लेजर के पड़ने कारण क्षतिग्रस्त हो जाते हैं इसलिए इस प्रकार की गैदरिंग में में उच्च क्षमता वाली लेजर का उपयोग नहीं करना चाहिए इससे किसी भी व्यक्ति को दृष्टिहीनता का शिकार होना पड़े।

इस वर्ष पड़ सकती है कड़ाके की सर्दी

रायपुर । इस साल के लिए दक्षिण-पश्चिम मानसून की विदाई हो चुकी है, इस बीच मौसम विभाग ने ला-नीना प्रभाव के बारे में अपडेट दिया है कि इस साल भारत में कड़ाके की सर्दी पड़ सकती है, क्योंकि अक्टूबर-नवंबर तक ला नीना की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना है। इसके प्रभाव से उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत में गंभीर शीत लहर आ सकती हैं। वहीं, आईएमडी प्रमुख मृत्युंजय महापात्र के मुताबिक दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी में देरी हो रही है। मानसून की विदाई अब 17 अक्टूबर तक होगी। 2024 में जून-सितंबर की अवधि में 8 प्रतिशत अधिक वर्षा के साथ मानसून की समाप्ति हो रही है।

छत्तीसगढ़ में अब तक 1165.6 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

रायपुर । राज्य शासन के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा बनाए गए राज्य स्तरीय नियंत्रण कक्ष द्वारा संकलित जानकारी के मुताबिक एक जून 2024 से अब तक राज्य में 1165.6 मिमी औसत वर्षा दर्ज की जा चुकी है। राज्य के विभिन्न जिलों में 01 जून 2024 से आज 02 अक्टूबर सवेरे तक रिकार्ड की गई वर्षा के अनुसार बीजापुर जिले में सर्वाधिक 2377.7 मिमी और बेमेतरा जिले में सबसे कम 606.6 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गयी है। राज्य स्तरीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष से प्राप्त जानकारी के अनुसार एक जून से अब तक सरगुजा जिले में 634.5 मिमी, सूरजपुर में 1160.8 मिमी, बलरामपुर में 1731.2 मिमी, जशपुर में 1064.1 मिमी, कोरिया में 1127.4 मिमी, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में 1088.7 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गयी।

रायपुर के जियो मार्ट में चाकूबाजी का वीडियो आया सामने, आरोपी युवक गिरफ्तार

भास्कर दूत

रायपुर। राजधानी में चाकूबाजी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। एक बार फिर से दुकान में घुसकर युवक पर धारदार चाकू से हमला किया है। इस घटना का वीडियो अब सामने आया है।

कटोरा तालाब स्थित जियो मार्ट में युवक पर मिर्ची पाउडर डालकर धारदार हथियार से हमला करने का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। जिसके बाद पतासाजी कर फरार आरोपी युवक को पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

चाकूबाजी के सामने आए इस वीडियो में देखा जा रहा है कि दो युवक काउंटर के पास बैठे हैं ऐसे में एक युवक गेट खोलकर अंदर घुसता है। और अपने पास रखे चाकू को निकलता है और बिना कुछ बोले ही वहीं पर बैठे युवक पर ताबड़तोड़ हमला कर देता है।

इसके पहले कि कोई कुछ समझ पाता युवका चाकू से दनादन वार करके फरार हो गया। वहीं सामने लगे सीसीटीवी में यह घटना कैद हो गई है। वीडियो के हाथ लगने के बाद पुलिस आरोपी की तलाश करके उसे हिरासत में ले लिया है और पूछताछ कर रही है। यह पूरा मामला सिविल लाइन थाना इलाके का है।

मुख्यमंत्री नौनिहाल छात्रावृत्ति योजना से पूरी हुई पिता की इच्छा

भास्कर दूत

रायपुर। ढीली सूती टी-शर्ट और धुली हुई जींस पहने हुए, दिनेश कुमार सेवक अपने बच्चों के भविष्य के सपने को लेकर उत्साहित दिखते हैं। पेश से इलेक्ट्रिशियन दिनेश ने बताया कि वे चाहते हैं उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले और बड़े होकर शिक्षक या पुलिस अधिकारी बनें। उनकी यह इच्छा अब मुख्यमंत्री नौनिहाल छात्रावृत्ति योजना से पूरी होने जा रही है। बारहवीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद, दिनेश कुमार के लिए रोज़गार के बेहतर अवसर उपलब्ध नहीं हो सके और वे इलेक्ट्रिशियन के काम से जुड़ गए। एक दिन उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता की जानकारी लेने के लिए मुख्यमंत्री श्रमिक हेल्पलाइन पर संपर्क किया। श्रम विभाग के अधिकारियों ने दिनेश को %मुख्यमंत्री नौनिहाल छात्रवृत्ति योजना% के बारे में बताया, इससे दिनेश को ऐसा लगा जैसे बंद किस्मत दरवाज़ा खुल गया हो।

अनुसूचित जाति समुदाय से ताल्लुक रखने वाले दिनेश कुमार ने बताया कि वे बिलासपुर जिले के सिंगरी गांव के रहने वाले हैं। उन्हें बचपन में न तो सही मार्गदर्शन मिला और न ही आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर लेकिन बच्चों के सुनहरे भविष्य को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे। उन्होंने बताया कि हेल्पलाइन से सारी प्रक्रिया समझने के बाद उन्होने आवेदन किया, इसके बाद उन्हें अपनी 12 और 14 वर्ष की दो बेटियों के लिए 3,000 रुपये की वित्तीय सहायता मिली। यह सहायता उनके तत्कालीन आर्थिक संकट को कम करने में सहायक सिद्ध हुई। दिनेश कुमार ने बताया कि मुख्यमंत्री नौनिहाल छात्रावृत्ति योजना से उनकी बेटियां अब बिना किसी फीस की चिंता किए पूरी तरह अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। वे आत्मविश्वास से कहते हैं। वे प्रतिदिन अपनी बेटियों को स्कूल छोड़ने जाते हैं, इस योजना के माध्यम से मिली आर्थिक सहायता ने न केवल उनके परिवार की स्थिति को बदला, बल्कि उनके बच्चों की शिक्षा का मार्ग भी प्रशस्त किया है।

छत्तीसगढ़ के स्कूलों में एससीईआरटी पाठ्य पुस्तक अनिवार्य करने की मांग

भास्कर दूत

रायपुर। छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम की किताबें कबाड़ में मिल रही है। पाठ्य पुस्तक निगम से करोड़ों के घोटाले की खबरें प्रतिवर्ष आती है। पुस्तकों की छपाई, वितरण और स्कूलों में पढ़ाए जाने तक सब गोलमाल हो रहा है, लेकिन सरकार इस समस्या का ठोस उपाय नहीं कर पा रही है।

छत्तीसगढ़ पैरेंट्स एसोसियेशन के प्रदेश अध्यक्ष क्रिष्टोफर पॉल का कहना है कि उनके द्वारा विगत दस वर्षों से यह मांग की जा रही है कि प्रदेश के सभी स्कूलों के कक्षा पहली से लेकर आठवीं तक की कक्षाओं को एससीईआरटी की पाठ्य पुस्तक ही अनिवार्य कर दिया जाए, लेकिन सरकार ने आज पर्यन्त ऐसा कोई सख्त आदेश जारी नहीं किया, इसलिए छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम की किताबें कबाड़ में मिल रही है, क्योंकि ज्यादातर प्राइवेट स्कूलों के द्वारा पाठ्य पुस्तक निगम की किताबों को लेते तो है, मगर प्राइवेट प्रकाशक की किताबों से अध्यापन कराया जा रहा है, और छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम की किताबें कबाड़ में बिक जाती है, जबकि सीबीएसई ने अपने स्कूलों के लिए शैक्षणिक वर्ष 2024-25 से 9वीं से 12वीं तक के लिए एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों को जरूरी कर दिया है। बोर्ड ने पहली से आठवीं तक की कक्षाओं को एनसीईआरटी की किताबों का उपयोग करने की सख्त सलाह दी है।

पॉल ने बताया कि, बोर्ड की संबद्धता कक्षा नवमीं से मान्य होता है और कक्षा पहली से लेकर कक्षा आठवीं तक स्कूल राज्य सरकार और जिला शिक्षा अधिकारी के अधिकार क्षेत्र में संचालित होते है, जिसका पूरा नियंत्रण राज्य और स्थानीय प्रशासन के पास होता है, तो राज्य को कक्षा पहली से लेकर आठवीं तक सभी स्कूलों में एससीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों को अनिवार्य कर देना चाहिए, तो किताबें कबाड़ में नहीं मिलेगा, बल्कि इन किताबों से बच्चों को स्कूलों में पढ़ाया जाएगा।

विधानसभा परिसर में महात्मा गांधी व शास्त्री जी की जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित

भास्कर दूत

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधान सभा परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी%% एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती के अवसर पर आज विधान सभा सचिव दिनेश शर्मा ने पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इस अवसर पर विधान सभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को पुष्पांजलि अर्पित कर उनको स्मरण किया। इस अवसर पर सचिवालय के अनुराग सिंह, कुंदन चौहान, लक्ष्मीकांत सेन, राजेश चौहान, रामकुमार यादव एवं साथियों द्वारा महात्मा गांधी के प्रसिद्ध भजन वैष्णव जन तो तेने कहिए एवं रघुपति राघव राजा राम का गायन किया गया। स्वच्छ भारत अभियान तहत द्वारा 01 घंटे का स्वच्छता हेतु स्वच्छता के संबंध में व्यापक श्रमदान किया गया। साथ ही जागरुकता प्रसारित करने के उद्देश्य से राज्य शासन के सामान्य प्रशासन के निर्देशानुसार विधानसभा सचिव दिनेश शर्मा एवं समस्त अधिकारी/कर्मचारियों विधानसभा सचिवालय के उपस्थित अधिकारियों /कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ भी दिलाई ।

अंतर महाविद्यालय साहित्यिक एवं बौद्धिक प्रतियोगिता का आयोजन

भास्कर दूत

जांजगीर-चांपा। ज्ञानदीप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन जांजगीर में 30 सितंबर को अंतर महाविद्यालयीन साहित्यिक एवं बौद्धिक प्रतियोगिता का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें तात्कालिक भाषण, पोस्टर, स्लोगन, शतरंज एवं कैरम प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। जिसमें ज्ञानरोशनी लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, ज्ञानोदय कॉलेज आफ एजुकेशन जांजगीर, केशरी शिक्षण समिति खोखरा जांजगीर व ज्ञानदीप कॉलेज आफष्एजुकेशन जांजगीर के प्रशिक्षार्थियां शामिल रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ज्ञानोदय कॉलेज ऑफ एजुकेशन के संचालक डॉ. सुरेश यादव तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डी.पी. केशरवानी उच्चतर माध्यमिक शाला के प्राचार्य रोशन केशरवानी व जिज्ञासा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य शुक्ला उपस्थित रहे। ज्ञानोदय कॉलेज से सहायक प्राध्यापक उपाध्याय, केशरी शिक्षण समिति से श्री तिवारी, ज्ञान रोशनी लोक कल्याण संस्था से सहायक प्राध्यापक श्रीमती अचला शर्मा, श्रीमती ओमिता थवाईत, दीपक बरेठ व ज्ञानदीप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन जांजगीर से संचालक डॉ. अखिलेश कटकवार तथा सहायक प्राध्यापक सुश्री निशा कश्यप, श्रीमती ममता शर्मा, लक्ष्मी नारायण कर्ष, श्रीमती दीपिका यादव एवं समस्त सहायक प्राध्यापक की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रतिभागियों को मुख्य अतिथियों के द्वारा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। चयनित प्रतिभागियों के नाम तात्कालिक भाषण रामांशु यादव प्रथम केशरी शिक्षण समिति खोखरा जांजगीर, मनीषा कैवर्त द्वितीय ज्ञानदीप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन जांजगीर, प्रियंका मिश्रा तृतीय ज्ञानदीप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन जांजगीर, शतरंज प्रतियोगिता में राजेश्वर खूटें प्रथम, ज्ञानरोशनी लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, गोरखनाथ यादव द्वितीय केशरी शिक्षण समिति खोखरा जांजगीर, कैरम प्रतियोगिता में अमन कुमार बर्मन प्रथम ज्ञानरोशनी को लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, उर्वशी दिनकर द्वितीय ज्ञानरोशनी लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, सतीश कश्यप तृतीय ज्ञानदीप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन जांजगीर, पोस्टर प्रतियोगिता में नेहा टोडर प्रथम ज्ञानरोशनी लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, भाग्यवती पटेल द्वितीय ज्ञानरोशनी लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, मिताली मिस्त्री तृतीय ज्ञानदीप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन जांजगीर, स्लोगन प्रतियोगिता में अंजू चंद्रा प्रथम केशरी शिक्षण समिति खोखरा जांजगीर, भावना राठौर द्वितीय ज्ञानरोशनी लोक कल्याण संस्था खोखरा जांजगीर, सतीश खुटिया तृतीय केशरी शिक्षण समिति खोखरा जांजगीर कार्यक्रम में शामिल हुए। समस्त प्रतिभागी को प्रशस्ति पत्र वितरण किया गया।

संक्षिप्त समाचार

रामलला दर्शन के लिए 37 श्रद्धालुओं का दल रवाना

सक्ती। राज्य के राम भक्तों के लिए नि:शुल्क अयोध्याधाम में श्री राम के दर्शन कराने हेतु श्री रामलला दर्शन (अयोध्याधाम) योजना की शुरूआत की गई है। जिसके तहत् विशेष ट्रेन के माध्यम से प्रत्येक जिलों से श्रद्धालुओं का चयन कर उन्हें रामलला के दर्शन हेतु सुविधाजनक रूप से ले जाया जा रहा है। इसी तारतम्य में कलेक्टर अमृत विकास तोपनो के निर्देशन में एसडीएम सक्ती अरुण कुमार सोम, डिप्टी कलेक्टर विश्वास कुमार तथा विभिन्न जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिला से 37 श्रद्धालुओं के दल को श्रीफल फोड़कर, तिलक लगाकर शुभकामनाएं देते हुए रवाना किया गया। तीर्थ यात्रियों में शामिल श्रद्धालु श्री योम लहरे, उदय मधुकर ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सरकार की श्री रामलला दर्शन (अयोध्याधाम) योजना के तहत हम प्रभु रामलला का दर्शन और पूजा करने जा रहे है। श्रद्धालुओं ने कहा की हम प्रभु श्री राम से सक्ती अंचल के साथ संपूर्ण देश प्रदेश के लोगों की खुशहाली व समृद्धि के लिए प्रार्थना करेंगे। इस अवसर पर अन्य विभिन्न श्रद्धालुओं ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को इस योजना के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। इस अवसर पर एसडीएम सक्ती अरुण कुमार सोम, डिप्टी कलेक्टर विश्वास कुमार, जिला पंचायत सदस्य टिकेश्वर गबेल, रंजन सिन्हा, उच्च न्यायालय अधिवक्ता चितरंजय पटेल, रामनरेश यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी-कर्मचारी और प्रभु श्री राम के दर्शन के लिए सक्ती जिले से जाने वाले सभी श्रद्धालु उपस्थित थे।

बास्केटबॉल में दूसरे स्थान पर रहे नेहरू महाविद्यालय के खिलाड़ी

नवागढ़। शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय जांजगीर में पुरुष एवं महिला बास्केटबाल प्रतियोगिता का आयोजन 30 सितम्बर को किया गया। जिसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय नवागढ़ के खिलाड़ियों ने जांजगीर की टीम को 1-0 से पराजित करके फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच अकलतरा टीम एवं पं. जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय के बीच हुआ। जिसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय की खिलाड़ियों पूजा आदिले, मनीषा कश्यप, सुमन साहू, पायल और आंसू रानी ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया, जिनमें से तीन छात्राओं का राज्य स्तरीय के लिए पूजा आदिले, मनीषा कश्यप, सुमन साहू का चयन किया गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू के संचालक वीके अग्रवाल एवं संचालिका श्रीमती अन्नपूर्णा बंसल एवं उप प्राचार्य सिंपल रजक द्वारा खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर वृद्धजनों के लिए स्वास्थ्य शिविर एवं सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

जांजगीर-चांपा / जिला पंचायत के सभाकक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर वृद्धजनों के लिए स्वास्थ्य जागरूकता शिविर एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि विधायक जांजगीर-चांपा श्री व्यास कश्यप की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों का स्वास्थ्य परीक्षण,औषधि वितरण किया गया तथा वृद्धजनों के लिए निहित प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दिया गया। कार्यक्रम में विधायक श्री व्यास कश्यप सहित अतिथियों ने समस्त वरिष्ठ नागरिकों को शाल, श्रीफल एवं फूलमाला से सम्मानित किया गया तथा उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखमय जीवन की कामना की। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर श्री सुमित बघेल , बड़ी संख्या में वृद्धजन सहित संबंधित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे ।

सिरकी मोड़ से तिवरता तक फोरलेन रोड बनाने उठ रही मांग

कोरबा । कोरबा-पश्चिम क्षेत्र में एसईसीएल दीपका कोयला खदान से प्रभावित ग्रामो के ग्रामीणों ने पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष अजय जायसवाल के साथ महाप्रबंधक से मुलाकात की। उन्होंने पुनर्वास ग्राम चैनपुर बतारी की समस्याएं बताई। सिरकी मोड़ से तिवरता तक फोरलेन सड़क बनाने मांग रखी।

जिला पंचायत के पूर्व उपाध्यक्ष ने महाप्रबंधक को ज्ञापन सौंपते हुए बताया कि दीपका-सिरकी मोड़ की सड़क खराब हो गई है।

कलेक्टर ने झाड़ू लगाकर किया श्रमदान,दिलाई स्वच्छता की शपथ

भास्कर दूत

जांजगीर चांपा / स्वच्छ भारत दिवस पर कलेक्टोरेट परिसर सहित सभी कार्यालयों में साफ सफाई एवं श्रम दान किया गया ।कलेक्टर श्री आकाश छिकारा ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित श्रद्धांजलि अर्पित की । कलेक्टर ने कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ मिलकर कलेक्ट्रेट परिसर की सफाई की और स्वच्छता का संदेश दिया।उन्होंने स्वच्छता की शपथ दिलाई। कलेक्टर ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक करते हुए कहा स्वच्छता हमारी जिम्मेदारी है और यह न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए बल्कि समाज के लिए भी आवश्यक है। हमें अपने कार्यस्थल और आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ रखने की आदत विकसित करनी चाहिए ।इस अभियान में कलेक्ट्रेट के सभी विभागों के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री एस पी वैद्य , सीएमओ जांजगीर श्री प्रह्लाद पांडेय सहित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे ।

सभी कार्यालयों में की गई साफ सफाई,श्रम दान का आयोजन

स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के अंतर्गत न केवल जिला मुख्यालय बल्कि सभी विकासखंड कार्यालयों, अनुविभाग कार्यालयों सहित अन्य विविध कार्यालयों में साफ सफाई किया गया। इसके साथ ही सभी नगरीय निकायों सहित ग्राम पंचायतों में श्रमदान एवं स्वच्छता शपथ सहित विविध अन्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कामाक्षी व आयुष को मिला राज्य स्तरीय सम्मान

भास्कर दूत

शिवरीनारायण। स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में आयोजित विद्यालय छात्र-छात्राओं के क्रीड़ा प्रतिस्पर्धा में तक्षशिला इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा आठवीं की छात्रा कुमारी कामाक्षी भारद्वाज ने राज्य स्तरीय एथलेटिक्स में ब्राउंज (कांस्य पदक) मेडल प्राप्त किया। आयुष यादव ने राज्य स्तरीय सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता में सिल्वर मेडल हासिल कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया और इन दोनों प्रतिभागियों का नाम राष्ट्रीय स्तरीय खेलों के लिए चयन होना संभावित है। विद्यालय के प्राचार्य प्रशांत प्रधान ने विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। इस हेतु हमें शारीरिक दक्षता की आवश्यकता पड़ती है और खेल ही एक महत्वपूर्ण साधन है जिससे हम शारीरिक एवं मानसिक रूप से दक्ष बन सकते हैं। दीपक पालीवाल ने हर्ष व्यक्त करते उन्होंने आगे कहा कि खेल को जीत हार की भावना से नहीं बल्कि खिलाड़ी भावना से खेलना चाहिए, जिससे हमारा सर्वांगीण विकास हो सके। संचालन समिति के सचिव पुरुषोत्तम (गप्पू) शर्मा एवं प्रेसिडेंट हुए सभी विद्यार्थियों को इस सफलता के लिए एवं विद्यालय का नाम रोशन करने के लिए एवं विद्यालय में कार्यरत राष्ट्रीय स्तर के व्यायाम शिक्षक संतोष कुमार कश्यप एवं खो-खो कोच पिंकी राय को धन्यवाद ज्ञापित किया।

उपमुख्यमंत्री शर्मा जिस स्कूल में पढ़े, अब उस स्कूल के बच्चों को मिलेगी स्मॉर्ट क्लास की सुविधा

उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा बुधवार को स्वामी करपात्री स्कूल में सिक्यूलेशन टेक्निक (स्मॉर्ट क्लास) का शुभारंभ किया, मिडिल, हाई और हायर सेकेंडरी स्कूल के तीन क्लास बनी स्मॉर्ट क्लास

भास्कर दूत

कवर्धा । प्रदेश के उपमुख्यमंत्री तथा गृहमंत्री विजय शर्मा जिस स्कूल में पढ़े, अब वहां के मिडिल, हाई और हायर सेकेंरी स्कूल के विद्यार्थी को सिक्यूलेशन टेक्निक (स्मॉर्ट क्लास अत्याधुनिक सुविधा) का लाभ मिलेगा।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री तथा गृहमंत्री श्री विजय शर्मा ने आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जयंती पर कवर्धा के स्वामी करपात्री जी स्कूल के तीन कक्षाओं में स्मॉर्ट क्लास सिक्यूलेशन टेक्निक का शुभारंभ किया। स्मार्ट क्लास के लोकार्पण के साथ अब वहां के मिडिल, हाई और हायर सेकेंरी स्कूल के विद्यार्थी को स्मॉर्ट क्लास अत्याधुनिक सुविधा का लाभ मिलेगा। इस दौरान उप मुख्यमंत्री ने स्मार्ट क्लास के संबंध में जानकारी ली। स्मार्ट क्लास की सुविधाओं के जरिए छात्रों को विशेष रूप से विज्ञान जैसे कठिन विषयों को बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलेगी। उपमुख्यमंत्री ने स्मार्ट क्लास के महत्व और इसके उपयोग पर भी छात्राओं से चर्चा की। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि शासकीय स्कूल के विद्यार्थियों को भी प्राइवेट स्कूलो की तरह स्मार्ट क्लास की सुविधा का लाभ मिले, इसके लिए प्रदेश की राज्य सरकार मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में चिंता कर रही है। शासकीय स्कूल के विद्यार्थियों को भी प्राइवेट स्कूलो की तरह स्मार्ट क्लास की सुविधा का लाभ मिले, इसकी शुरुआत कबीरधाम जिले के स्वामी करपात्री जी स्कूल से करने का प्रयास किया जा रहा है।

उपमुख्यमंत्री के विशेष प्रयासों से कबीरधाम जिले के 70 स्कूलों में स्मार्ट क्लास की सुविधा मिलेगी। उन सभी स्कूलों का चयन कर लिया गया है। स्मॉर्ट क्लास की शुरुआत जिले के स्वामी करपात्री जी स्कूल से हो रही है।

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने उस अवसर पर अपने छात्र जीवन के पुरानी यादों को स्मरण किया। उन्होंने अपने शिक्षकों, सहपाठियों के नाम लेते हुए याद किया। उन्होंने कहा कि आज मैं जिस स्कूल में पढ़ाई पूरी की, आज उस स्कूल में आने पर सुखद अनुभूति हो रही है।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने कवर्धा के स्वामी करपात्री जी स्कूल से पढ़ाई की है। उन्होंने यहां मिडिल स्कूल से लेकर हायर सेकेंडरी स्कूल तक की पढ़ाई इस स्कूल से की है। वे साइंस के विद्यार्थी रहे, और कक्षा बाहरवी में श्री शर्मा शाला नायक भी बने।

नगरीय निकाय/त्रि स्तरीय पंचायत निर्वाचन 2024

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री नम्रता गांधी ने दिलाई ''जाबो'' की शपथ

भास्कर दूत

धमतरी। नगरीय निकायों एवं त्रिस्तरीय पंचायतों के आम निर्वाचन 2024-25 के लिए तैयार किए जाने वाले फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली के प्रचार-प्रसार हेतु छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग, रायपुर द्वारा ''जाबो'' (जागव वोटर) कार्यक्रम तैयार किया है। इसके तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री नम्रता गांधी ने आज कलेक्टोरेट परिसर में अधिकारी, कर्मचारियों को ''जाबो'' की शपथ दिलाई। शपथ में कहा गया कि मैं अपने एवं अपने परिवार के 18 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके सभी सदस्यों को मतदान करने हेतु प्रेरित करूंगी। मैं आगामी निर्वाचनों में भय एवं लोभ से मुक्त होकर मतदान करूंगा एवं प्रजातांत्रिक व्यवस्था में भागीदारी निभाते हुए तथा अपना नैतिक दायित्व निभाते हुए अन्य सभी व्यक्तियों को भी मतदान करने हेतु अनिवार्य रूप से प्रोत्साहित करूंगी। में विशेषकर दिव्यांग मतदाताओं को मतदान प्रक्रिया में भाग लेने हेतु प्रेरित करूंगा और मैं यह भी प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं नैतिक मतदान ही करूंगा।

नवरात्र पर्व पर गंजपारा बालोद में गूंजेगी देवी भागवत कथा

कलश यात्रा सुबह 9 बजे गणेश मंदिर से महादेव भवन पहुंचेगी

भास्कर दूत

बालोद। ममतामयी मां के पर्व नवरात्र पर माता की भक्ति के लिए गंजपारा में दुर्गा मंदिर समिति के द्वारा देवी भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। देवी भागवत कथा रुचिता तिवारी बिलासपुर के द्वारा कही जायेगी। कथा के लिए महादेव भवन में भव्य पंडाल का निर्माण किया गया है। दुर्गा मंदिर को भी सजाया जा रहा है।

साफ-सफाई से लेकर सजावट के काम भी किए जा रहे हैं। आज से शारदीय और मनौकामना जोत जलाए जाएंगे। श्रद्धालु अपनी मनोकामना को पूर्ण करने नौ दिनों तक पूजा पाठ करेंगे।

बालोद नगर में श्री दुर्गा समिति गंजपारा सहित समस्त नागरिकों के तत्वाधान और प्रयासों से इस बार की नवरात्रि खास होने जा रही है।दुर्गा मंदिर समिति के द्वारा जहां गंजपारा के दुर्गा मंदिर में विशेष आयोजन हर वर्ष

होते ही है वही इस बार श्रीमद् श्री देवी भागवत कथा का आयोजन भी किया जा रहा है। कथा 3 से 11 अक्टूबर तक चलेगी। कथा का समय दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक रहेगा। कथा सुनाने के लिए बिलासपुर की लाडली रुचिता तिवारी का आगमन होगा जो

अलग-अलग दिन विविध कथा प्रसंग सुनाएंगी। कार्यक्रम से संबंधित जानकारी देते हुए व्यवस्थापक राजू पटेल ने बताया कि कथा इस साल श्री महादेव भवन गंजपारा बालोद में है। पहले दिन सुबह 9 बजे गणेश मंदिर से महादेव भवन तक कलश शोभायात्रा निकाली जाएगी। वही नवरात्र के अवसर पर 3 अक्टूबर को सुबह 11ः30 ज्योति प्रचलित का कार्यक्रम होगा। मंदिर में प्रतिदिन सुबह 7ः3श बजे आरती और शाम को 7 बजे आरती के साथ माता सेवा होंगे। आयोजन की तैयारी में श्री दुर्गा समिति गंजपारा बालोद के व्यवस्थापक राजू पटेल सहित संरक्षक टिकेंद्र साहू, अध्यक्ष ओम प्रकाश शर्मा, सचिव मनोज चांडक, उपाध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल, मीडिया प्रभारी जितेंद्र साहू हैं।

कलश वेदी पूजन के साथ होगा प्रारंभ

श्रीमद् देवी भागवत के तहत प्रथम दिन 3 अक्टूबर गुरुवार को कलश यात्रा वेदी पूजन कथा प्रसंग का आयोजन होगा। 4 अक्टूबर शुक्रवार को मधु कैटभ एवं शुक्र देव जन्म, 5 अक्टूबर शनिवार को व्यास जन्म पांडव की कथा एवं सत्यवती उत्पत्ति, 6 अक्टूबर रविवार को सुदर्शन कथा, मत्रों की महिमा नवरात्रि विधि पूजा, 7 अक्टूबर को नर नारायण कथा, नारद माया चरित्र, 8 अक्टूबर को महिषासुर कथा, शुम निशुंभ वध, 9 अक्टूबर को हरिचंद कथा, शांति पीठ का वर्णन, 10 अक्टूबर को सती चरित्र तुलसी विवाह लक्ष्मी गंगा सरस्वती कथा 11 अक्टूबर को गौतम कथा ,गायत्री उपासना ,सावित्री कथा नरक वर्णन 12 अक्टूबर को हवन सहस्त्र धारा पूणाहुति होगी साथ ही 12 अक्टूबर को कन्या भोज और महाप्रसादी का आयोजन किया जाएगा इस तरह विविध आयोजन के साथ यह श्रीमद् देवी भागवत संपन्न होगा।

भास्कर दूत

रायपुर, गुरुवार 03 अक्टूबर 2024

संपादकीय

सजा देने का काम पुलिस का नहीं

भारत में या किसी भी सभ्य समाज में मुठभेड़ में या पुलिस और न्यायिक हिरासत में आरोपियों या अपराधियों का भी मारा जाना समूची व्यवस्था के ऊपर धब्बा होता है। यह अपराध न्याय प्रणाली और समाज व्यवस्था पर कलंक है। किसी भी व्यक्ति के ऊपर आरोप चाहे जितने भी गंभीर हों लेकिन उसे सजा देने का काम पुलिस का नहीं है। उसे कानून के हिसाब से अदालत से सजा मिलेगी। पुलिस को न्याय करने का अधिकार नहीं है। और पुलिस की इन मासूम कहानियों का भी कोई अर्थ नहीं होता है कि हथकड़ी में बंद आरोपी ने पुलिस वालों से हथियार छीन लिए या भागने की कोशिश की और इस क्रम में पुलिस के हाथों मारा गया।

इस तरह की मनोहर कहानियां समूची न्याय व्यवस्था का मजाक उड़ाने वाली होती हैं। लेकिन हैरानी की बात है कि अदालतें आमतौर पर इन कहानियों पर यकीन कर लेती हैं। यह अच्छा है कि महाराष्ट्र के बदलापुर में अक्षय शिंदे की इनकाउंटर में हुई हत्या की कहानी पर हाई कोर्ट को यकीन नहीं हुआ है। अदालत ने कहा है कि पुलिस की कहानी में इतने झोल हैं कि उस पर यकीन करना मुश्किल है। परंतु जब अदालतें पुलिस की कहानियों पर यकीन नहीं करती हैं तब भी थोड़ी बहुत फटकार या सख्ती के बाद बात आई गई हो जाती है।

इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए कोई ठोस पहल नहीं होती है। ध्यान रहे भारत में फर्जी मुठभेड़ को अपराध और मौलिक अधिकार का उल्लंघन माना जाता है लेकिन राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के एक पुराने आंकड़े के मुताबिक 2002 से 2017 के बीच भारत में 1,728 फर्जी इनकाउंटर हुए थे।

बहरहाल, असली मुठभेड़ आतंकवादियों के साथ होती है या नक्सलियों के साथ होती है। असली मुठभेड़ दंतेवाड़ा में होती है, जहां बहादुर जवान जान गंवाते हैं। असली मुठभेड़ जम्मू कश्मीर में होती है, जहां इस साल जुलाई में 10 जवान शहीद हुए हैं। असली मुठभेड़ मुंबई पर हुए आतंकी हमले के समय हुई थी, जिसमें मुंबई पुलिस के अनेक डेकोरेटेड और जांबाज अधिकारी शहीद हुए थे। इस राज्य या उस राज्य की पुलिस जो मुठभेड़ करती है, जिसमें किसी पुलिस वाले की बांह में या किसी की जांघ में गोली लगती है वह आमतौर पर फर्जी होती है। अगर राज्यों की पुलिस की एसटीएफ या एटीएस के ये जवान इतने ही जांबाज हैं तो इनको तत्काल बस्तर और दंतेवाड़ा में या कश्मीर और मणिपुर भेजा जाना चाहिए। हकीकत यह है कि राज्यों में बनी ज्यादातर एसटीएफ या एटीएस का काम कानून व्यवस्था पर राज्य की सरकारों के लिए धारणा बनाने या धारणा को नियंत्रित करने का हो गया है। जब कानून व्यवस्था का सवाल उठता है और लोग नाराज होते हैं तो ये लोग कुछ आरोपियों को मुठभेड़ में मार गिराते हैं। इसके लिए उन्हें इनाम इकराम मिलते हैं। समाज में कुछ लोग इनके लिए तालियां बजाते हैं लेकिन उनको नहीं पता होता है कि वे एक भस्मासुर पैदा कर रहे हैं, जिसका शिकार वे खुद भी हो सकते हैं।

बहरहाल, अभी देश मुठभेड़ की तीन घटनाओं को लेकर आंदोलित हैं। कहीं कहीं लोग रोमांचित भी हैं। लेकिन लोगों का क्या है! ये तीन प्रतिनिधि घटनाएं हैं। इनमें से एक उत्तर प्रदेश की घटना है, दूसरी महाराष्ट्र की है और तीसरी तमिलनाडु की है। यानी उत्तर, पश्चिम और दक्षिण भारत की एक जैसी कहानी है। उत्तर प्रदेश में कुछ दिन पहले एक डकैती हुई, जिसमें शामिल एक कथित आरोपी मंगेश यादव को यूपी पुलिस की एसटीएफ ने मुठभेड़ में मार गिराया। मुठभेड़ के बाद की जो तस्वीरें मीडिया में आईं उसमें टीम का नेतृत्व करने वाले अधिकारी हवाई चप्पल में ही थे और किसी ने भी मुठभेड़ में पहनी जाने वाली कॉम्बैट ड्रेस नहीं पहनी थी। इसे लेकर खूब मजाक बना। लेकिन इस मुठभेड़ को लेकर राजनीतिक विवाद भी शुरू हो गया।

मैं एक पत्रकार हूँ

देश दुनिया की खबरों का राज़दार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।
देता लोगों को खबरों का भंडार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।
जनता जनार्दन का अमूल्य उपहार हूँ।
जी हाँ,मैं एक पत्रकार हूँ।।
जीवन रूपी नैया की पतवार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
नित नई खबरों को देने वाला अखबार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
लोगों के सपनों का खेवनहार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
जगह-जगह बनकर जाता मेहमान हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
आवाम को खतरों से करवाता सावधान हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
गम और खुशी का करवाता इजहार हूँ।
जी हाँ,मैं एक पत्रकार हूँ।।
निष्ठा और लगन से करता अपना काम हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
जान जोखिम में डाल लाता खबर वो इंसान हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
राष्ट्रहित,समाज हित का पहरेदार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
गीले शिकवे भुलाकर देता समाचार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
अपनी कलम का दिखाता कमाल ऐसा कलमकार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
अंधेरों को चीरकर लाता खबर वो राज़-दान हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
कभी हंसाता, रुलाता, गुदगुदाता ऐसा फनकार हूँ।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।
जी हाँ, मैं एक पत्रकार हूँ।।

नवनीत कुमार हरदेल
ग्राम-कुम्हालोरी
जिला-बालोद (छ.ग.)

नेवता नेवत के हो जग रचौं महामाई

// नवरात्रि विशेष //

ह मारे छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र में नारी रुपेण दैवीय आस्था व जनविश्वास के प्रतिमूर्ति को देवी एवं माता की संज्ञा प्राप्त है। ग्राम्यांचल की लोक-आराध्य देवी मातादाई, बूढ़ीदाई, कंकालीन, शीतला, दुर्गादाई, बहीदाई, सतबहिनी, चंडीदाई, महामाई आदि रूप में सर्वत्र विराजित हैं, जिन पर लोगों की अपार श्रद्धा व भक्ति भाव देखते ही बनता है। ग्रामीण अपने हार्दिकभाव को श्रद्धापुष्प अर्पित कर इन देवियों के चरणों पर आशा व विश्वास का दीप जलाते हैं। हृदय से निकलने वाली दैवीय भावना की तरंगे जिव्हा से मुखरित होती हैं, जो लयबद्ध लोकगीत बनती है। धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर नवरात्र पर्व विशेष पर गाये जाने वाला लोकगीत जसगीत कहलाता है। जसगीत अर्थात यशगीत लोक आराध्य देवी के रूप-सौंदर्य, शौर्य-पराक्रम एवं कृपा विशेष के यश गान की लोक प्रस्तुति की जसगीत है। नौ दिनों तक निजी एवं सार्वजनिक स्थान के जोत-जँवारा एवं देवी-स्थापत्य स्थल पर देवी को शक्ति रूपेण जगद्जननी को गीत के जरिये आमंत्रित किया जाता है। लोक विश्वास है कि देवी के आमंत्रित होने पर नवरात्रि को शुभ मानी जाती है। इस समय समस्त देवतागण एवं सारा ब्रह्मांड माता के साथ आमंत्रित होते हैं।

नेवता नेवत के हो... जग रचौं
महामाई...नेवता नेवत के हाँ...
ब्रह्म ल नेवतेंव विष्णु ल नेवतेंव
नेवतेंव कैलाश पति ला
राजा इंदरदेव वहू ल नेवतेंव
नेवता नेवत के हो...जग रचौं...
शब्द संरचना =

अन्य लोकगीतों की तरह जसगीत में भी प्रथम दो पंक्तियाँ मुखड़ा होती है, जो हो माँ, हे माता, दाई, भवानी.... के साथ लयबद्ध होती है। पद संख्या दो या तीन होती है। आजकल जसगीत प्रतियोगिताओं में किसी देवी के कथा प्रसंग को लेकर लंबी जसगीत की रचना होने लगी है। इनकी पद संरचना में देवी के गुणों का बखान प्रश्नोत्तर रूप में होता है। प्रश्नोत्तर के पंक्तियों के गायन के पश्चात मुखड़े को गाया जाता है। इस तरह एक विशेष गायन शैली पचरा कहलाता है। पचरा के पंक्ति सर्वप्रथम गायकप्रमुख के द्वारा गाया जाता है, फिर समूहगान होता है। देवी स्थापना दिवस के स्थिति, तिथि, साज-सज्जा, भेंट -चढ़ावा कथाप्रसंग के मुताबिक पचरा गाया जाता है। पचरा लोगों के लोक वाद्ययंत्रों के सुमधुर ध्वनि के साथ वीर, क्रोध, शांत, करुणा, भक्ति रसों का रसपान कराता है। देवीय से भक्त प्रभावित हो कर नाचने-गाने और झूमने लगते हैं। पचरा की बानगी प्रस्तुत है-

तुम खेलव दुलरवा
रनबन रनबन हो....
का पूजा लेवय बाल बरमदेव
का पूजा लेवय गोरंइयाँ
का पूजा लेवय बन के रक्सा
हो रनबन हो....
नरिहर लेवय बाल बरमदेव
कुकरा लेवय गोरंइयाँ
भँइस्सा लेवय बन के रक्सा
हो रनबन हो... तुम खेलव...।
देवी के रूप-सौंदर्य का दर्शन =

जसगीत का प्रथम व महत्वपूर्ण भाग है सिंगार गीत। सिंगार यानी श्रृंगार करना नारी सुलभ प्रवृत्ति है। नारी सुंदरता का प्रतीक मानी जाती है। सुंदरता नारी के भौतिक गुणों को अवगत कराती है। प्राकृतिक सौंदर्य प्राप्त होने पर भी नारी में अतिरिक्त बाह्य सौंदर्य प्राप्त होने पर भी नारी में अतिरिक्त सौंदर्य अर्जन करने का स्वभाव होता है। नवरात्र के प्रथम दिवस से ही आराधक नारी रूपेण देवी स्वरूपा जगदम्बे को श्रृंगार सामग्री जैसे सिंदूर, बिंदी, कुमकुम, चूड़ी, चुनरी, साड़ी, आभूषण आदि से अलंकृत देवी की पाषाण प्रतिमा में सजीवता उभरती है। पंचमी तिथि विशेष महत्व रखता है। रूप-सौंदर्य का देवी-जसगीत कुछ इस तरह होती है-

मइया पचरंग पचरंग
करत हे सिंगार हो माँ...
पचरंग परदा परयो भवन हे
पचरंग कलस बनाई
पचरंग दरी बने पचरंगी
पचरंग साज सजाई
हो मइया पचरंग....।
शौर्य-पराक्रम का वर्णन =

शांति रुपेण माता जगदंबा शक्ति का रूप होती है। दुर्गा, काली, भवानी की संज्ञा प्राप्त देवी पाप, अधर्म, अन्याय का नाश करती है। दुर्गा-महिषासुर संग्राम के कथा प्रसंग में देवी के शौर्य-पराक्रम व वीरता का वर्णन जसगीत में सुनने को मिलता है। सिंह पर सवार सशस्त्र देवी दुर्गा का रणभूमि में कूच करने का वृतांत जसगीत के लोकधुन की प्रस्तुति होती है। यह कथा प्रसंग नारी को शक्ति दायिनी व पाप हारिणी के रूप में चित्रित करता है; साथ ही यह भी संदेश देता है कि पुरुष प्रधान समाज में नारी अपने यथोचित स्थान पाने के लिए शांति मार्ग की अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर अपनी शक्ति का प्रयोग कर समस्त नारीजाति को जीवन जीने का अधिकार निर्धारित करती है-

महिषासुर मारन बर हो
चले हो दुरगा दाई
सिंह मा हो के सवार....
एक हाथ धरे तलवार
दूसर हाथ मा कटारी
महिसासूर संग करै लड़ाई भारी
चम चम चमके हो तलवार
चले हो...।
देवी के प्रति सेवा भावना =

नवरात्र पर्व के दौरान लोगों के हृदय में देवी के प्रति सेवा भाव सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी होती है। माता सेवागीत में जगद्जननी के प्रति आराधक के सेवा भाव का जिक्र होता है। भक्त देवी को भौतिक वस्तुएँ अर्पित कर माता सम्मान की भावना रख सेवाभाव को और प्रबल करता है; साथ ही दूसरों को भी अपनी सेवाभावना को व्यक्त करने की कुछ इस तरह अनुरोध करता है,जो सेवागीतकहलाता है।

गुथौ हो मालिन माई बर फुलगजरा
कउने फूल के अजरा गजरा
कउने फूल के हार
कउने फूल के माथ-मकुटिया
सोला ओ सिंगार... गुथौ हो....
चम्पा फूल के अजरा गजरा
चमेली फूल के हार
सेवती फूल के माथ-मकुटिया
सोला ओ सिंगार...गुथौ हो मालिन...।
विदाई का भाव जसगीत =

नवमीं तिथि देवी का विदाई-दिवस होता है। नौ दिनों तक माता-पुत्र एवं देवी-भक्त का संबंध कायम रहता है। सेवा, समर्पण, मान-सम्मान, भक्ति, आशीष का ही समय होता है यह नवरात्र पर्व। देवी और भक्त, अतिथि-आतिथेय सा संबंध नौ दिवस तक बनाये रखता है। अष्टमीं को हवन होता है।नवमीं के दिन देवी-प्रतिमा व ज्योत-जँवारा के विसर्जन के समय भक्तगण भाव विह्वल हो जाते हैं। विदाई बेला का दृश्य-चित्रण जसगीत के लोकधुन में बड़ा मर्मस्पर्शी होता है।

तोला कइसे भेजँव दाई
तोला कइसे भेजँव ना...
होगे तोर जाये के बेरा
रो रो के मँय मर जइहौं
तोला कइसे भेजँव ओ...।

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)
सम्पर्क : 9753269282.

छत्तीसगढ़ के बचेली वन क्षेत्र में प्राचीन वनस्पतियों का जीवंत संग्रह

छ त्तीसगढ़ वन विभाग ने हाल ही में पारिस्थितिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण वन क्षेत्र की पहचान की है, जो दंतेवाड़ा वन मंडल के बचेली वन परिक्षेत्र में स्थित है और बीजापुर के गंगालूर वन परिक्षेत्र तक फैला हुआ है। इस विशेष वन क्षेत्र में कई प्राचीन वनस्पतियों की प्रजातियां पाई गयीं है, जो छत्तीसगढ़ राज्य की असाधारण जैव विविधता को प्रदर्शित करता है। इस क्षेत्र को वैज्ञानिकों और वन अधिकारियों ने जैव विविधता के लिए अत्यधिक समृद्ध और महत्वपूर्ण माना है। विशेषज्ञों के अनुसार, यह खोज न केवल इस क्षेत्र के पर्यावरणीय महत्व को दर्शाती है, बल्कि भविष्य में वन अनुसंधान और संरक्षण के प्रयासों को भी नई दिशा देगी।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस क्षेत्र की जैव विविधता को संरक्षित करने और वन अनुसंधान को बढ़ावा देने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा कि इस खोज से राज्य को पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक नई पहचान मिलेगी। सरकार इस क्षेत्र में शोध और अध्ययन के लिए विशेष प्रोत्साहन देगी, ताकि इन दुर्लभ प्रजातियों को संरक्षित रखा जा सके। वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार, यह दुर्लभ वन क्षेत्र विशेष रूप से उन पौधों की प्रजातियों का घर है, जो करोड़ों साल पहले के समय में अस्तित्व में थीं। अब यह क्षेत्र न केवल वैज्ञानिक अध्ययन के लिए बल्कि पर्यटन के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन सकता है।

समुद्र तल से 1,240 मीटर से अधिक की ऊंचाई पर स्थित यह वन क्षेत्र सबट्रॉपिकल ब्रॉड-लीव्ड हिल फॉरेस्ट (फॉरेस्ट टाइप 8) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। खास बात ये है की यह छत्तीसगढ़ का सबसे ऊंचाई वाला वन क्षेत्र हो सकता है। जबकि राज्य में मुख्य रूप से मॉइस्ट एंड ड्राय डेसिड्युअस फॉरेस्ट्स (फॉरेस्ट टाइप 3 एंड 5) के लिए जाना जाता है, यह विशेष वन पैच ब्रॉड-लीव्ड हिल फॉरेस्ट एक नया पारिस्थितिक आयाम प्रस्तुत करता है।

यहां की वनस्पति पश्चिमी घाट की वनस्पतियों से काफी हद तक मेल खाती है। कांगेर घाटी के जंगलों की तरह, यह क्षेत्र भी विभिन्न प्रकार की प्रजातियों से समृद्ध है। इसके अलावा, मानवजनित दबाव की कमी होने कारण इन प्रजातियों को बिना किसी बाधा के पनपने में मदद मिली है। इस क्षेत्र को एक 'जीवित संग्रहालय' माना जा रहा है, क्योंकि यहां कई प्राचीन पौधों की प्रजातियां संरक्षित हैं, जो संभवत: प्रागैतिहासिक काल, यहां तक कि डायनासोर युग से संबंधित हो सकती हैं। यहां पाई गई कुछ वनस्पतियों की प्रजातियों को छत्तीसगढ़ में पहली बार दर्ज किया गया माना जा रहा है।

इस विशेष वन का तीन दिवसीय सर्वे अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (विकास एवं योजना) श्री अरुण कुमार पांडे, आईएफएस के नेतृत्व में किया गया। इस सर्वे दल में पर्यावरणविदों और वन अधिकारियों के साथ-साथ आईएफएस परिवीक्षाधीन अधिकारी श्री एस. नवीन कुमार और श्री वेंकटेशा एम.जी. भी शामिल थे। इसके अलावा, वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के उप निदेशक डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्रा और पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज के पूर्व विभागाध्यक्ष श्री एम.एल. नायक भी सर्वे टीम का हिस्सा थे।

सर्वे के दौरान, टीम ने दुर्लभ और प्राचीन वनस्पतियों की कई प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया है, जिनमें ऐल्सोफिला स्पिनुलोसा (ट्री फर्न), ग्नेटम स्कैंडन्स, ज़िज़िफस रूगोसस, एंटाडा रहीडी, विभिन्न रुबस प्रजातियाँ, कैंथियम डाइकोकूम, ओक्ना ऑब्टुसाटा, विटेक्स ल्यूकोजाइलन, डिलेनिया पेंटागाइना, माचरेन्जा साइनेंसिस, और फिकस कॉर्डिफोलिया शामिल हैं। इनमें से माचरेन्जा साइनेंसिस प्रजाति संभवत: छत्तीसगढ़ के केवल इसी वनीय पहाड़ी क्षेत्र में पाई गई है।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री व्ही. श्रीनिवास राव, आईएफएस ने इस विशेष वन क्षेत्र के बारे में कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं वन मंत्री श्री केदार कश्यप के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ वन विभाग राज्य की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण के लिए लगातार प्रयासरत रहा है। बचेली का ये बेहद विशेष वन क्षेत्र राज्य वन विभाग की जैव विविधता के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बचेली का ये विशेष वन भविष्य के अनुसंधान एवं इको-टूरिज्म के विकास के लिए महत्वपूर्ण संभावनाएं प्रस्तुत करता है। वन विभाग इस क्षेत्र की छिपी हुई जैव विविधता को और गहराई से समझने के लिए अधिक विस्तृत सर्वेक्षण करने की योजना बना रहा है।

लक्ष्मीकांत कोसरिया,
डिप्टी डायरेक्टर जनसंपर्क

चीन विरोधी रुख क्वॉड-2024 में मुख्य थीम

बाइडेन ने अपना चीन विरोधी रुख दो-टूक व्यक्त किया। कहा कि चीन हर मोर्चे पर हमारा इम्तिहान ले रहा है। चीन की चुनौती और इंडो-पैसिफिक में उसके बढ़ते कथित दबदबे से निपटना क्वॉड-2024 में मुख्य थीम बना रहा।

वैसे तो अमेरिका के डेलवेयर में आयोजित क्वॉड्रिंगुलर सिक्युरिटी डायलॉग (क्वॉड) शिखर सम्मेलन की विदाई बैठक कहा गया था, लेकिन यहां इसके सदस्य देशों ने चीन के खिलाफ सख्त रुख अपनाया। इसे विदाई बैठक इसलिए कहा गया, क्योंकि यह अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा की इसमें आखिरी भागीदारी थी। अगले कुछ महीनों में दोनों अपने पद से रिटायर्ड हो जाएंगे। लेकिन जाते-जाते बाइडेन ने अपना चीन विरोधी रुख दो-टूक व्यक्त किया। कहा कि चीन हर मोर्चे पर हमारा इम्तिहान ले रहा है। चीन की चुनौती और इंडो-पैसिफिक में उसके बढ़ते कथित दबदबे से निपटना क्वॉड-2024 में मुख्य थीम बना रहा। जारी साझा बयान में कहा गया- हम विवादित पक्षों के सैन्यीकरण और दक्षिणी चीन सागर में बलपूर्वक और धमकाने वाले पैतरों पर गंभीर चिंता जाहिर कर रहे हैं। इसके बावजूद क्वॉड नेता चीन का सीधे नाम लेने से बचे। यहां तक कि बाइडेन ने बैठक में जब कहा कि 'चीन लगातार आक्रामक बर्ताव कर रहा है और समूचे क्षेत्र में हमें जांच रहा है', तो बताया गया कि ये टिप्पणी सार्वजनिक तौर पर नहीं की जानी थी।

शब्द सामर्थ्य– 393

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. चौड़ी और सपाट जमीन, रणभूमि 3. स्वरग्राम, संगीत के सात स्वरों का समूह 6. धूल का कण, किसी वस्तु का सूक्ष्मकण, धूल 7. हिम्मत, सामर्थ्य 8. अभ्यर्थना, रिसेप्शन, यथा अवसर पर पूछे जाने वाला मंगल कुशल 9. आपस का करार, निबटारा 10. वरदान, दुल्हा 12. भोग, ऐश्वर्य 13. कीमत, मूल्य 14. एक वाद्ययंत्र जिसे सपेरे बजाते हैं 16. समता, बराबरी 18. अश्लील, बेहुदा, अभद्र, घटिया 19. युक्ति, उपाय, ढंग 20. रिक्त, अपूर्ण।

ऊपर से नीचे
1. दोस्ती, मित्रता 2. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 4. बचाव, हिफाजत 5. मीठापन, मधुर होने का भाव 7. समुद्र 8. आत्मनिर्भर, जो दूसरे पर आश्रित न हो 9. रसवाला, रसदार 11. मां का बच्चों के प्रति प्रेम 13. खैरात, देने की क्रिया 15. दृष्टि, निगाह 16. वरिष्ठ, बुजुर्ग, चतुर 17. पराजय, हार।

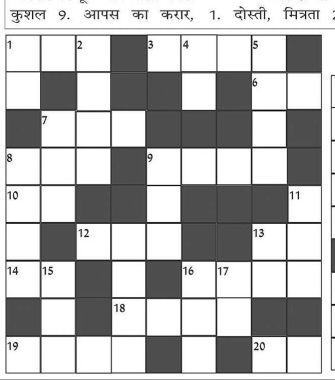

शब्द सामर्थ्य – 392

ला	लू	प्र	सा	द	या	द	व		
प		ति			र	क्ष	क		
र	ह	मा	न						आ
वा			मि	थु	न		दा		स
ह	वा	ला	त		सी	ता			पा
	न				ब	क	वा		स
औ	र	त		म		त			
ला		बे	च	ना		व	च		न
द	ह	ला		ना	ग	र			दी

राशिफल

मेष
आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। इस राशि के छात्रों को अपने शिक्षकों का पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। आज अपनी छिपी हुई प्रतिभा को पहचानकर उसे रचनात्मक कार्यों में लगाएंगे। इससे आपको मानसिक मिलेगा।

वृषभ
आज आपका दिन ठीक-ठाक रहेगा। पारिवारिक माहौल बेहतर बना रहेगा। आपके काम में परिवार वालों का सहयोग बना रहेगा। कारोबार में मेहनत का फायदा मिलेगा। आज राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े मित्र की पावर आपके लिए कारगर साबित होगी।

मिथुन
आज आपका दिन खुशनुमा पल लेकर आया है। आज आप अपना लक्ष्य निर्धारित करने के लिए कोई नई योजना बनायेंगे, योजना भविष्य में कारगर साबित होगी। आज स्वास्थ्य संबंधी हल्की-फुल्की परेशानी रहने की वजह से आलस और सुस्ती हावी रहेगी।

कर्क
आज आपका दिन नया बदलाव लाने वाला है। आज नौकरी कर रहे लोगों को अपने किसी प्रोजेक्ट को पूरा करने में बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। जीवनसाथी के साथ खट्टी-मीठी नोकझोंक रहेगी। जिसकी वजह से संबंधों में और अधिक नजदीकियां बढ़ेंगी।

सिंह
आज आप खुशियों से भरे दिन की शुरुआत करने वाले हैं। पारिवारिक मामलों को लेकर आपको थोड़ी भागदौड़ करनी पड़ेगी। गतिविधियों में आपका योगदान होने से आपका मान-सम्मान भी बढ़ेगा। आपके व्यक्तिगत काम भी आज काफी हद तक सुचारू रूप से पूरे हो जाएंगे।

कन्या
आज आपका दिन उत्साह से भरा रहेगा। आपके पारिवारिक रिश्ते मजबूत होंगे। नवविवाहितों के जीवन में खुशियाँ बढ़ेगी। आज अपने जीवन को सकारात्मक नजरिए से समझने की कोशिश करेंगे तो इससे चल रही गलतफहमियां सुलझ जाएंगी।

तुला
छात्रों के करियर में आज नया बदलाव आयेगा, जो उनके भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। आपकी सेहत बढ़िया रहेगी। आज आपका अपने प्रियजनों के साथ बहुत ही बेहतरीन समय बीतेगा। घरेलू कामों में रुचि बनी रहेगी और रिलैक्स महसूस करने के लिए मनोरंजन संबंधी योजनाएं भी बन सकती हैं।

वृश्चिक
आज आपका दिन सामान्य रहेगा। ऑफिस के काम में आप थोड़े बिजी होंगे। आपको थोड़ी थकान महसूस होगी, अपने खान पान पर विशेष ध्यान दें। आज राजनैतिक और अनुभवी व्यक्ति की सलाह और मदद आपके व्यवसाय को नई दिशा देगी।

धनु
आज किसी खास काम में आपको फायदा मिलेगा। माता-पिता के साथ आपके रिश्ते बेहतर होंगे। जीवनसाथी आपकी बातों से प्रभावित होंगे, आपके कामों में आपकी मदद भी करेंगे। आज आपके स्वभाव में वहम और गुस्से की स्थिति देखने को मिल सकती है जिसकी वजह से परिवार के लोग भी परेशान रहेंगे।

मकर
आज आपका दिन लाभदायक रहेगा। आज काफी हद तक तनावमुक्त महसूस करेंगे।आज बहुत व्यवस्थित रहने का समय है। आज आप ध्यान रखेंगे कि आपकी बात से किसी को आघात ना पहुंचे। अपनी महत्वपूर्ण चीजों की संभाल खुद करेंगे।

कुंभ
आज आपका दिन नई उमंगों के साथ शुरू होगा। लवमेट के लिए आज का दिन शानदार रहेगा। आज मीडिया और कम्युनिकेशन से संबंधित व्यवसाय में उपलब्धियों के योग बन रहे हैं। इस उचित समय का भरपूर सदुपयोग करेंगे। व्यवसायिक पार्टियों के साथ संबंध मधुर बनाने का प्रयास करेंगे।

मीन
आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। घर में नजदीकी रिश्तेदारों के आने से उत्सव का माहौल रहेगा। कई तरह के विचारों का आदान-प्रदान रहेगा। घर में काफी समय बाद निकट संबंधियों का आगमन होगा और आपसी विचारों को साझा करने से घर के वातावरण को खुशनुमा बनाकर रखेगा।

सू–दोकू क्र. 393

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू–दोकू क्र. 392 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

भास्कर दूत

भारतीय शेयर बाजार सपाट बंद, मिडकैप और स्मॉलकैप में हुई खरीदारी

मुंबई । भारतीय शेयर बाजार के लिए कारोबारी सत्र उतार-चढ़ाव भरा रहा। बाजार की शुरुआत तेजी के साथ हुई थी, लेकिन कारोबार के अंत में मुख्य सूचकांक सपाट बंद हुए।

सेंसेक्स 33 अंक की मामूली गिरावट के साथ 84,266 और निफ्टी 13 अंक की मामूली गिरावट के साथ 25,796 पर बंद हुआ। मुख्य सूचकांकों के हल्के लाल निशान में बंद होने के बाद भी बाजार का रुझान सकारात्मक था। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर 2,308 शेयर हरे निशान और 1,655 शेयर लाल निशान और 91 शेयर बिना किसी बदलाव के बंद हुए। लार्जकैप की अपेक्षा मिडकैप और स्मॉलकैप में खरीदारी देखी गई। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 204 अंक या 0.34 प्रतिशत की तेजी के साथ 60,358 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 151 अंक या 0.79 प्रतिशत की तेजी के साथ 19,331 पर था।

ऑटो, आईटी, पीएसयू बैंक, फार्मा, मेटल, मीडिया, सर्विसेज और कंज्यूमर ड्यूरेबल इंडेक्स हरे निशान में बंद हुए। फिन सर्विस, एफएमसीजी, रियल्टी, एनर्जी, प्राइवेट बैंक और पीएसई इंडेक्स दबाव में बंद हुए। सेंसेक्स पैक में टेक महिंद्रा, एमएंडएम, कोटक महिंद्रा बैंक, इन्फोसिस, एसबीआई, एचसीएल टेक, विप्रो, नेस्ले, आईसीआईसीआई बैंक, टीसीएस, अल्ट्राटेक सीमेंट, बजाज फिनसर्व और सन फार्मा टॉप गेनर्स थे। इंडसइंड बैंक, एशियन पेंट्स, एचयूएल, टाटा मोटर्स, टाटा स्टील, टाइटन, रिलायंस, एनटीपीसी और एलएंडटी टॉप लूजर्स थे। बोनान्जा पोर्टफोलियो में अनुसंधान विश्लेषक वैभव विदवानी का कहना है कि बाजार में आज उतार-चढ़ाव देखा गया। आईटी शेयरों में तो खरीदारी हुई, लेकिन ऑयल एंड गैस और एनर्जी सेक्टर में बिकवाली हुई है, जो दिखाता है कि शुक्रवार के बाद हुई भारी गिरावट के बाद निवेशक सतर्कता बरत रहे हैं। कारोबारी सत्र की शुरुआत हरे निशान में हुई थी। सुबह 9:23 बजे सेंसेक्स 246 अंक या 0.35 प्रतिशत की तेजी के साथ 84,592 और निफ्टी 79 अंक या 0.31 प्रतिशत की बढ़त के साथ 25,890 पर था।

सेबी ने फ्यूचर्स और ऑप्शन ट्रेडिंग के नियम किए सख्त, अब ट्रेडर्स को खर्च करने होंगे अधिक पैसे

मुंबई । भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) की ओर से फ्यूचर्स और ऑप्शन (एफएंडओ) ट्रेडिंग के नियमों को सख्त कर दिया गया है। अब इस सेगमेंट में कारोबार करने के लिए ट्रेडर्स को पहले के मुकाबले अधिक पैसे खर्च करने होंगे। बाजार नियामक द्वारा अब इंडेक्स डेरिवेटिव में कॉन्ट्रैक्ट साइज की न्यूनतम वैल्यू को 5 लाख रुपये से बढ़ाकर 15 लाख रुपये कर दिया गया है। साथ ही साप्ताहिक एक्सपायरी को प्रति एक्सचेंज एक इंडेक्स तक सीमित कर दिया है। ऐसे में अब एक एक्सचेंज की ओर से सप्ताह में एक ही एक्सपायरी देखने को मिलेगी।

सेबी की ओर से जारी सर्कुलर में कहा गया कि डेरिवेटिव्स में उच्च जोखिम को देखते हुए और मार्केट की वृद्धि के अनुरूप कॉन्ट्रैक्ट के साइज में पुनर्संयोजन यह सुनिश्चित करेगा कि प्रतिभागियों के लिए अपेक्षित मानदंड बने रहें। बाजार नियामक की ओर से यह कदम रिटेल निवेशकों द्वारा एफएंडओ सेगमेंट लगातार किए जा रहे बड़े नुकसान के कारण उठाया गया है।

हाल ही में सेबी की ओर से एक स्टडी जारी की गई थी। इसमें बताया गया था कि बीते तीन वर्षों में 1.10 करोड़ ट्रेडर्स की ओर से संयुक्त रूप से 1.81 लाख करोड़ रुपये का नुकसान किया गया है। इसमें से केवल 7 प्रतिशत ट्रेडर्स ही पैसा कमाने में सफल हुए हैं। इसके कारण बाजार से जुड़े कई लोगों ने एफएंडओ नियमों को सख्त बनाने की बात कही थी।

सेबी के इस आदेश के बाद निफ्टी और सेंसेक्स जैसे मुख्य सूचकांकों में डेरिवेटिव्स कॉन्ट्रैक्ट्स का साइज 5 लाख से 10 लाख रुपये से बढ़कर 15 लाख से 20 लाख रुपये हो जाएगा। नए नियम 20 नवंबर, 2024 से सभी डेरिवेटिव्स कॉन्ट्रैक्ट्स पर लागू हो जाएंगे। भारत में बीते कुछ वर्षों में डेरिवेटिव बाजार तेजी से बढ़ा है। जुलाई में सेबी के नोट में कहा गया था कि भारत के डेरिवेटिव मार्केट ने कैश मार्केट को भी पछाड़ दिया है।

प्लक ने डी2सी पोषण ब्रांड अपनॉरिश का किया अधिग्रहण

मुंबई । अपनी तरह के पहले डिजिटल लाइफस्टाइल-ओरिएंटेड फ्रेश फूड ब्रांड, प्लक ने भारत के सबसे तेजी से बढ़ते पोषण ब्रांड में से एक अपनॉरिश के अधिग्रहण की घोषणा की है।

1.4 मिलियन डॉलर मूल्य का यह सौदा दोनों कंपनियों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह अब पोषण पर केंद्रित एक नए वर्टिकल के विकास को मजबूती प्रदान कर सकेगा।

2021 में आयुषी और कुओनल लखपति द्वारा स्थापित, अपनॉरिश, 23बीएमआई लाइफ साइंसेज प्राइवेट लिमिटेड का एक उद्यम है, जो अपने पुरस्कार विजेता भोजन प्रतिस्थापन उत्पादों जैसे स्मूदी, सूप और बार के साथ-साथ व्यक्तिगत पोषण योजनाओं के साथ पोषण उद्योग में क्रांति ला रहा है। उनका अभिनव दृष्टिकोण वजन प्रबंधन, पीसीओडी, मधुमेह और उच्च कोलेस्ट्रॉल जैसी विभिन्न स्वास्थ्य चिंताओं का समाधान करता है। उनके उत्पाद अमेजॉन, फ्लिपकार्ट, रिलायंस फ्रेशपिक और गोदरेज बास्केट जैसे प्रमुख प्लेटफॉर्म पर पूरे भारत में उपलब्ध हैं।

अपनॉरिश एकमात्र भारतीय मील रिप्लेसमेंट ब्रांड है, जिसके पास डबल चॉकलेट, फ्रेंच वेनिला, स्ट्रॉबेरी, मैंगो, ठंडाई और कैफे फ्रैपे जैसे स्मूदी फ्लेवर और मंचो, टोमैटो और क्रीमी अनियन फ्लेवर में सूप की विस्तृत रेंज है। अपनॉरिश के लक्षित ग्राहक आम तौर पर 28-55 आयु वर्ग के हैं, जिनमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं और ये मुख्य रूप से टियर 1 और 2 भारतीय शहरों से हैं।

इस बीच, प्लक ने बिचौलियों को दरकिनार करते हुए उपभोक्ताओं को सीधे 300 से अधिक फल, सब्जियां, मील किट, जूस, डिप्स, सूप, स्मूदी और सलाद की पेशकश कर फार्म-टू-टेबल को फिर से परिभाषित किया है। ओजोन-वाशिंग और ट्रेसेबिलिटी जैसे नवाचारों के माध्यम से प्लक सबसे ताजा, उच्चतम गुणवत्ता वाले उत्पाद सुनिश्चित करता है। अधिग्रहण पर टिप्पणी करते हुए, प्लक के सीईओ प्रतीक गुप्ता ने कहा, हम पोषण आयाम जोड़कर प्लक के ग्राहकों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला ताजा भोजन उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता को अगले स्तर पर ले जा रहे हैं। हम अपनॉरिश का प्लक परिवार में स्वागत करते हुए रोमांचित हैं, क्योंकि इस कदम से प्लक के ग्राहकों को सीधे लाभ होगा।

7वें वीकेंड पर सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बनी स्त्री 2, तोड़ा आरआरआर और बाहुबली 2 का रिकॉर्ड

अमर कौशिक निर्देशित फिल्म 'स्त्री 2' बॉक्स ऑफिस पर बिल्कुल भी रूकने का नाम नहीं ले रही है. इस फिल्म को रिलीज हुए डेढ़ महीने से ज्यादा हो गया है लेकिन ये बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ ढीली करने को तैयार नहीं है. यहां तक कि अब तो सिनेमाघरों में जूनियर एनटीआर की देवरा भी रिलीज हो चुकी है लेकिन 'स्त्री 2' पर इसका भी कोई असर नहीं पड़ा है और इसने सातवें वीकेंड पर भी ताबड़तोड़ कमाई की है. हॉरर कॉमेडी फिल्म स्त्री 2 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. तब से ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुंडली जमाए बैठी है. इस बीच कई फिल्में आई और चली भी गईं लेकिन स्त्री 2 को कोई टस से मस नहीं कर पाया. स्त्री 2 अपनी रिलीज से लेकर अब तक तमाम फिल्मों को धूल चटा

चुकी है. साल 2024 की सबसे बड़ी हिट फिल्म बन चुकी स्त्री 2 ने शाहरुख खान की जवान के हिंदी में लाइफाइम कलेक्शन को भी मात दे दी थी और ये हिंदी की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म भी बन चुकी है. वहीं स्त्री 2 को अब सिनेमाघरों में धमाल मचाते हुए डेढ़ महीने से ज्यादा हो गया है और हैरानी की बात ये है कि सातवें वीकेंड पर भी फिल्म ने करोड़ों में कमाई की और नया रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया. बता दें कि अपने 7वें वीकेंड पर 'स्त्री 2' ने एसएस राजामौली-प्रभास की बाहुबली 2 और एसएस राजामौली-राम चरण-जूनियर एनटीआर की आरआरआर को पछाड़ते हुए सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है. 'स्त्री 2' के कलेक्शन की बात करें तो तरण आदर्श द्वारा शेयर किए गए आंकड़ों के मुताबिक फिल्म ने पहले हफ्ते में 307.80 करोड़, दूसरे हफ्ते में 145.80 करोड़, तीसरे हफ्ते में 72.83 करोड़, चौथे हफ्ते में 37.75 करोड़, पांचवें हफ्ते में 25.72 करोड़ का कारोबार और छठे हफ्ते में 19.72 करोड़ रुपये की कमाई की।

रोमांटिक कॉमेडी फिल्म अमर प्रेम की प्रेम कहानी का ट्रेलर जारी

आदित्य सील के प्यार में गिरफ्तार हुए सनी सिंह

सनी सिंह, आदित्य सील और प्रनूतन बहल अभिनीत रोमांटिक कॉमेडी अमर प्रेम की प्रेम कहानी के निर्माताओं ने फिल्म का ट्रेलर जारी कर दिया है। ट्रेलर में अमर (सनी सिंह) के जीवन की एक झलक दिखाई गई है, जो अपनी कामुकता का पता चलने पर सामाजिक अपेक्षाओं से घुटन महसूस करता है। ट्रेलर से साफ हो रहा है कि फिल्म का उद्देश्य समाज को एक अहम संदेश देना है। फिल्म रूढ़िवादिता को तोड़ने की कोशिश करती है।

अमर प्रेम की प्रेम कहानी का ट्रेलर जारी करते हुए निर्माताओं ने कैप्शन में लिखा, रूढ़िवादिता को तोड़ने का समय। ये प्रेम कहानी आपके होश उड़ाने के लिए आ रही है। अमर प्रेम की प्रेम कहानी, स्ट्रीमिंग 4 अक्टूबर से, केवल जियो सिनेमा प्रीमियम पर। ट्रेलर में अमर (सनी सिंह) आजादी की तलाश में लंदन की यात्रा करता है, और अपनी उड़ान में अप्रत्याशित रूप से उसे प्रेम (आदित्य सील) से प्यार हो जाता है।

अनन्या पांडे की अपकमिंग फिल्म सीटीआरएल का ट्रेलर रिलीज

इंटरनेट की चालबाज दुनिया में जूझती नजर आईं अभिनेत्री

डायरेक्टर विक्रमादित्य मोटवानी की फिल्म सीटीआरएल का ट्रेलर रिलीज हो गया है। फिल्म में अनन्या पांडे लीड रोल में नजर आ रही हैं। फिल्म का ट्रेलर जबरदस्त है और भविष्य में सेंध लगाने की कोशिश करता है। फिल्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली है। रिलीज से पहले ही ट्रेलर में अनन्या पांडे की एक्टिंग की जमकर तारीफ हो रही है। अनन्या के साथ फिल्म में लीड रोल निभाने वाले विहान समत और देविका वत्सा शामिल हैं। फिल्म 4 अक्टूबर को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो रही है।

फिल्म की कहानी काफी दिलचस्प नजर आ रही है। ट्रेलर में इसकी झलकियां भी दिखाई गई हैं। ट्रेलर में दिखाया गया है कि अनन्या पांडे अपनी जिंदगी काफी खुशहाल तरीके से जी रही होती हैं। इसी दौरान अनन्या का किरदार एक सोशल मीडिया एप पर जाता है और खुशी के पल शेयर करता है। लेकिन इसी बीच अनन्या को प्यार में धोखा मिलता है, जिससे अनन्या बुरी तरह टूट जाती हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर चल रहा एप अनन्या को बॉयफ्रेंड से दूरी बनाने की सलाह देता है और यहीं से कहानी दिलचस्प मोड़ ले लेती है। ट्रेलर में अनन्या पांडे दमदार एक्टिंग करती नजर आ रही हैं।

ये फिल्म एआई और उसके दुष्परिणामों पर प्रकाश डालती है। साथ ही वर्तमान में चल रहे एआई के डेवलपमेंट और उसके प्रयोगों को लेकर भी भविष्य में झांकने का प्रयास करती है। हालांकि अब देखना होगा कि फिल्म रिलीज के बाद कितने लोगों को प्रभावित कर पाती है।

खेल

रविचंद्रन अश्विन

2 मैच | 11 विकेट | 114 रन

भारत ने बांग्लादेश को दो मैच की टेस्ट सीरीज के दूसरे मुकाबले में 7 विकेट से हरा दिया है। इसी के साथ टीम ने सीरीज में 2-0 से क्लीन स्वीप भी कर लिया। होम ग्राउंड पर भारत की यह 18वीं टेस्ट सीरीज जीत है। सीरीज में 114 रन बनाने के साथ 11 विकेट लेने वाले रविचंद्रन अश्विन प्लेयर ऑफ द सीरीज चुने गए। उन्हें टेस्ट में 11वीं बार यह अवॉर्ड मिला। इस मामले में उन्होंने श्रीलंका के दिग्गज स्पिनर मुथैया मुरलीधरन की बराबरी कर ली।

भारत ने घर में लगातार 18वीं टेस्ट सीरीज जीती

अश्विन 11वीं बार प्लेयर ऑफ द सीरीज बने, मुरलीधरन की बराबरी की; टॉप रिकॉर्ड्स

भारत की घर में लगातार 18वीं टेस्ट सीरीज जीत

बांग्लादेश पर सीरीज जीत के साथ भारत ने अपने घर में लगातार 18वीं टेस्ट सीरीज जीत ली। भारत 2012 में आखिरी बार इंग्लैंड से 4 टेस्ट की सीरीज 2-1 से हारा था। 2013 में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 4-0 से हराया और तब से लगातार 18 सीरीज पर कब्जा किया। बांग्लादेश के खिलाफ भारत ने 8वीं टेस्ट सीरीज जीती। भारत ने ओवरऑल बांग्लादेश को 13वां टेस्ट हराया, दोनों के बीच 2 मुकाबले ड्रॉ रहे। बांग्लादेश एक भी टेस्ट मैच भारत से नहीं जीत सका।

अश्विन ने रिकॉर्ड 11वीं बार प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड जीता

रविचंद्रन अश्विन ने बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में 114 रन बनाए और 11 विकेट भी लिए। उन्हें प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया। यह अश्विन का 39 सीरीज में 11वां प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड रहा। इस मामले में उन्होंने श्रीलंका के दिग्गज मुथैया मुरलीधरन की बराबरी की। उनके नाम 60 सीरीज में 11 बार प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड जीतने का वर्ल्ड रिकॉर्ड है। मुरलीधरन संन्यास ले चुके हैं। ऐसे में अश्विन के पास उनसे आगे निकलने का सुनहरा मौका है।

सबसे ज्यादा टेस्ट जीत में चौथे नंबर पर भारत

भारत ने बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट में जीत के साथ सबसे ज्यादा टेस्ट जीतने के मामले में चौथा स्थान हासिल कर लिया। टीम ने साउथ अफ्रीका को पीछे छोड़ा, जिसके नाम 179 जीत है। भारत के नाम अब 180 टेस्ट जीत हो चुकी हैं। भारत से आगे अब केवल 3 ही टीमें बची हैं। इनमें ऑस्ट्रेलिया के नाम 414, इंग्लैंड के नाम 397 और वेस्टइंडीज के नाम 183 जीत हैं।

भारत ने 7.36 के रन रेट से बैटिंग की

टीम इंडिया ने पहली पारी के 34.4 ओवर में 8.22 के रन रेट से 285 रन बनाए थे। टीम ने फिर दूसरी पारी में 17.2 ओवर में 5.65 के रन रेट से 95 रन का टारगेट भी हासिल कर लिया। मैच में टीम ने 52 ओवर बैटिंग की और 7.36 के रन रेट से स्कोर किया। यह टेस्ट इतिहास में बेस्ट रन रेट का रिकॉर्ड है।

भारत ने साउथ अफ्रीका का 19 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा, जिन्होंने 2005 में जिम्बाब्वे के खिलाफ 6.80 के रन रेट से बैटिंग की थी। 2022 में इंग्लैंड ने पाकिस्तान के खिलाफ 6.73 के रन रेट से स्कोर किया था। जो इस रिकॉर्ड में तीसरे नंबर पर है।

एक नजर

टेनिस स्टार एंजेल का सीआईएससीई राष्ट्रीय खेलों के लिए चयन

अहमदाबाद । अदाणी स्पोर्ट्सलाइन साबरमती रिवरफ्रंट स्पोर्ट्स पार्क में टेनिस अकादमी की युवा ट्रेनी एंजेल मोरेरा को सीआईएससीई राष्ट्रीय खेल 2024 में भाग लेने के लिए चुना गया है। वह इस आयोजन में लड़कियों की अंडर-19 श्रेणी में प्रतिस्पर्धा करेंगी।

इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए एंजेल का चयन उनके उभरते टेनिस करियर में एक टर्निंग पॉइंट है। यह युवा भारतीय प्रतिभाओं को वैश्विक मंच के लिए और उनका शानदार भविष्य तैयार करने के लिए अकादमी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एंजेल ने चयन पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, मैं सीआईएससीई नेशनल गेम्स 2024 के लिए चुने जाने पर सम्मानित महसूस कर रही हूं। यह अवसर मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा है। वर्षों की कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है, जो मैं इस मुकाम तक पहुंची हूं। मैं अदाणी स्पोर्ट्सलाइन अकादमी से प्राप्त समर्थन और प्रशिक्षण के लिए आभारी हूं, जिसने एक खिलाड़ी के रूप में मेरे विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शूटिंग: पार्थ राकेश माने ने लीमा जूनियर वर्ल्ड्स में दोहरा स्वर्ण पदक जीता

लीमा । पार्थ राकेश माने ने 10 मीटर एयर राइफल में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक और टीम इवेंट में स्वर्ण पदक जीतकर जूनियर विश्व चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। यह मुकाबला इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (आईएसएसएफ) जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में हुआ। पार्थ ने 10 मीटर एयर राइफल व्यक्तिगत खिताब जीतने के बाद, अजय मलिक और अभिनव शॉ के साथ मिलकर पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल टीम इवेंट में भी स्वर्ण पदक जीता। भारत को तीसरा स्वर्ण भी मिला जब गौतमी भानोट, शंभवी क्षीरसागर और अनुष्का ठाकुर ने जूनियर महिला टीम इवेंट में 10 मीटर एयर राइफल में जीत हासिल की। लेकिन दिन की सबसे बड़ी उपलब्धि 16 साल के पार्थ माने की रही। उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 24-शॉट के फाइनल में 250.7 अंक हासिल किए और चीन के मौजूदा जूनियर एशियाई चैंपियन हुआंग लिवानलिन को 0.7 अंकों से पछाड़ दिया। इसके अलावा, अमेरिका के ब्रेडन पीसर ने कांस्य पदक जीता, जबकि पेरिस ओलंपिक के रजत पदक विजेता स्वीडन के विक्टर लिंडग्रेन चौथे स्थान पर रहे। मौजूदा डबल जूनियर विश्व चैंपियन रोमन औफ्रेर छठे स्थान पर रहे।

भारत ने 7 विकेट से जीता कानपुर टेस्ट, घर पर जीती लगातार 18वीं सीरीज

कानपुर । टीम इंडिया ने कमाल का खेल दिखाते हुए कानपुर टेस्ट मैच को अपने नाम कर लिया है. बांग्लादेश ने भारत को जीतने के लिए 95 रनों का लक्ष्य दिया था, जिसे टीम इंडिया ने 18वें ओवर्स में ही बना लिया और 7 विकेट से मैच जीत लिया. इस मैच को जीतने के साथ ही टीम इंडिया ने 2 मैचों की सीरीज में बांग्लादेश को क्लीन स्वीप कर दिया है. घर पर भारत की यह लगातार 18वीं सीरीज जीत है.

कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में खेले गए मैच में भारत ने शानदार जीत दर्ज की है. टीम इंडिया को चौथी पारी में 95 रनों का आसान लक्ष्य मिला था, जिसका क्रेडिट पूरी तरह से भारतीय गेंदबाजों को जाता है. अब इस लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम ने 3 विकेट गंवाकर लक्ष्य को हासिल किया और

बांग्लादेश का सूपड़ा साफ

7 विकेट से जीत हासिल कर ली. चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में भारत ने जीत हासिल कर सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल की थी. टीम इंडिया और बांग्लादेश की टीम जब कानपुर आई, तो मैच शुरू तो हुआ लेकिन खराब मौसम के चलते बीच में ही रुक गया. पहले दिन 35 ओवर खेलकर बांग्लादेश ने 107/3 का स्कोर बनाया था. लेकिन फिर ढ़ाई दिन का खेल बारिश की भेंट चढ़ गया. तब ऐसा लगने लगा कि कानपुर टेस्ट ड्रॉ हो जाएगा, मगर ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि भारतीय बल्लेबाजों ने टेस्ट में भी टी-20 वाला खेल दिखाया जी हां, अपनी पहली पारी में भारत ने शुरुआती 3 ओवर में 50 रन बनाकर ये मैसेज दे दिया था कि वह ड्रॉ के लिए नहीं रिजल्ट के लिए खेल रहे हैं।

जडेजा 300+ टेस्ट विकेट लेने वाले बाएं हाथ के पहले भारतीय स्पिनर

कानपुर । भारत और बांग्लादेश के बीच कानपुर में खेले जा रहे टेस्ट में रवींद्र जडेजा ने कहर बरपाते हुए तीन विकेट ले लिए हैं। उन्होंने मैच के पांचवें दिन बांग्लादेश की दूसरी पारी में तीन विकेट झटके। जडेजा ने बांग्लादेशी कप्तान नजमुल हुसैन शांतो (19), लिटन दास (1) और शाकिब अल हसन (0) को पवेलियन भेजा। उनके कुल टेस्ट विकेट की संख्या 303 हो गई है। जडेजा ने 300 का आंकड़ा बांग्लादेश की पहली पारी के दौरान छुआ था। उन्होंने खालिद अहमद को आउट कर यह उपलब्धि हासिल की थी। जडेजा इसी के साथ टेस्ट में 300 विकेट लेने वाले पहले बाएं हाथ के भारतीय स्पिनर बन गए हैं।

विटोरी-वॉर्न की इस सूची में शामिल

उनसे पहले छह भारतीय गेंदबाजों ने 300 या उससे ज्यादा विकेट लिए हैं, लेकिन इनमें कोई भी बाएं हाथ का स्पिनर नहीं है। जडेजा से पहले अनिल कुंबले (दाएं हाथ के लेग स्पिनर), आर अश्विन (दाएं हाथ के ऑफ स्पिनर), कपिल देव (दाएं हाथ के तेज गेंदबाज), हरभजन सिंह (दाएं हाथ के स्पिनर), ईशांत शर्मा (दाएं हाथ के तेज गेंदबाज) और जहीर खान (बाएं हाथ के तेज गेंदबाज) ने 300 से ज्यादा टेस्ट विकेट लिए हैं।

सीमेंट पोल में लोहे के फेसिंग वायर बांधकर ब्लाक किया आवागमन जागे सिंचाई विभाग के अधिकारी, अवैध प्लाटिंग के लिए बने रास्ते को किया बंद

भास्कर दूत

अकलतरा। सिंचाई विभाग के जिम्मेदार अधिकारी एक वर्ष बाद कुंभकर्णी निद्रा से जागे। अतत: कालोनी की सीमा दीवार को तोड़कर बनाए गए रास्ते को सीमेंट के पोल में लोहे के फेसिंग वायर बांधकर अस्थायी रूप से बंद कर दिया।

बताते चले कि भू- माफियाओं द्वारा सिंचाई विभाग के मजबूत गोदाम को तोड़कर धीरे-धीरे अवैध प्लाटिंग के लिए रास्ता बनाने का कार्य सिंचाई विभाग के अधिकारियों के मिलीभगत से किया गया था तथा स्टोर में रखे लाखों रुपये के सामान को पार करते हुए दुस्साहस के साथ तोड़कर समतलीकरण कर दिया गया। किन्तु विभाग के जिम्मेदार अधिकारी तमाशबीन बने रहे। आज तक गोदाम तोड़ने एवं लाखों का सामान पार करने बालों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। विभाग के जिम्मेदार अधिकारी, पुलिस थाना तथा बरिष्ठ अधिकारियों को पत्र लिखकर अपने कर्तव्य की पूर्ति कर ली। पुलिस के पास कार्रवाई करने के लिए समय नहीं है। बताया जाता है कि सिंचाई विभाग की भूमि के पीछे भू-माफियाओं द्वारा एकमुश्त जमीन खरीदकर प्लाटिंग कर बेचने की साजिश के अंतर्गत गोदाम को तोड़ा गया। उनके इस कृत्य में सिंचाई विभाग के जिम्मेदारों का संरक्षण होने के कारण शासकीय सम्पत्ति को क्षतिग्रस्त करने के बावजूद इनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गई। खबरों के सामने आने व पूर्व विधायक सौरभ सिंह की शिकायत के बाद कुछ माह तक अवैध प्लाटिंग का कार्य बंद कर दिया गया था किन्तु कुछ समय पूर्व अवैध प्लाटिंग पुन: शुरु की गई जिसकी शिकायत जिला प्रशासन से करने पर अंतत: सिचाई विभाग ने अस्थाई रूप से वर्तमान में रास्ता बंद कर अपने आप को बचाने का प्रयास किया है। यह समझ से परे है कि भू-माफिया मजबूत गोदाम तोड़कर रास्ता बना सकते हैं तो तार से फेसिंग की गई यह व्यवस्था कितने दिन टिकेगी यह सोचने का विषय है नहरों के रख-रखाव में प्रतिमाह करोड़ों रुपये का खर्च करने वाला विभाग 10 फुट चौड़ी दीवाल बनाने में भी संकोच कर रहा है क्या कारण है कि दिवार पर खर्च करने के लिए दस हजार नहीं है। यहां यह बताना जरूरी है कि कई वर्षों से नगर एवं उससे लगे हुए गांव में अवैध कालोनी बनाने का कार्य तेजी से चल रहा है।

राजस्व विभाग के नाक के नीचे अवैध प्लाटिंग

सर्वाधिक रोचक तथ्य यह है कि नगर में राजस्व विभाग के अनुविभागीय अधिकारी तहसीलदार एवं पटवारी कार्यालय स्थापित है किन्तु उन्हें भी अवैध प्लाटिंग दिखाई नहीं दे रही है भू माफियाओं द्वारा लगातार अवैध रूप से प्लॉटिंग की जा रही है, जिसमें कई जगह को कालोनी का नाम भी दे दिया गया है इसके बाद भी राजस्व विभाग के अधिकारियों द्वारा कोई भी कार्रवाई न कर भू-माफिया को संरक्षण दिया जा रहा है। बता दे कि शासन द्वारा भूमि की प्लाटिंग के लिए कालोनाइजर लायसेंस की अनिवार्यता के साथ ही बिजली, पानी, सफाई एवं नाली की पूर्ण व्यवस्था कालोनाइजर को करना अनिवार्य है किन्तु आज तक अवैध रूप से विकसित की जा रही कालोनी में एक भी सुविधा उपलब्ध नहीं कराई गई है।

अभी भी नियमों को ताक में रखकर बेची जा रही जमीन समुचित व्यवस्था

एवं कालोनाइजर पंजीयन तथा डायवर्सन के बिना भूमि को टुकड़े कर बेचने का सिलसिला लगातार चल रहा है। जिसका शिकार स्वयं के मकान का चाह रखने वाले व्यक्ति हो रहे है जो इनसे प्लाट खरीदकर मूलभूत सुविधा के लिए भटकते रहते हैं। खिसोरा ग्राम पंचायत के अंतर्गत अवैध निर्मित कालोनी का नामकरण कृष्णा विहार के नाम से कर बकायदा बोर्ड लगा दिया गया है इस ग्राम पंचायत की अन्य भूमि में भी प्लाटिंग करने की तैयारी चल रही है।

संक्षिप्त समाचार

रेलवे ट्रेक में अज्ञात ने कूदकर की आत्महत्या

जांजगीर चांपा। ग्राम बिरगहनी से होकर गुजरी रेलवे ट्रेक में एक व्यक्ति ने ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या की है। सिटी कोतवाली पुलिस ने बताया कि बीती रात रेलवे स्टेशन मास्टर ने सूचना दी थी। मौके पर पहुंच कर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल के मर्चुरी में रखा गया है। मृतक की पहचान नही हो सकी है। पहचान कराने का प्रयास जारी है। मृतक ने ऑरेंज कलर की शर्ट और खाखी कलर का पेंट पहना हुआ है।

शादी का झांसा देकर दैहिक शोषण, आरोपी गिरफ्तार

अकलतरा। नाबालिग बालिका को आरोपी द्वारा शादी का झांसा देकर बहला फुसलाकर दैहिक शोषण किया गया। पुलिस सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार रिपोर्ट पर आरोपी के विरुद्ध थाना में अपराध क्र 462, धारा 363, 366, 376 भादवि 4, 6 पाक्सो एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया था। नाबालिग बालिका पर घटित अपराध को गंभीरता से लेते हुए आरोपी जाकिर मोहम्मद वार्ड 14 अकलतरा निवासी को उसके घर से घेराबंदी कर पकड़ा जिसको हिरासत मे लेकर घटना के संबंध मे पूछताछ करने पर जुर्म स्वीकार किए जाने पर गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड में भेजा गया।

नही हो रही बारिश उमस से लोग परेशान

जांजगीर-चांपा। करीब सप्ताह भर से बारिश नही हो रही है। तापमान बढ़ने लगा है। इसके चलते उमस भी बढ़ गया है। उमस भरी गर्मी से लोग बेहाल है। तापमान बढ़कर 35 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। वही न्यूनतम तापमान भी 25 डिग्री से अधिक चल रहा है।

दिल्ली में आयोजित राजनीति की पाठशाला में युवा नेता श्याम जायसवाल का सम्मान

समाज के हर वर्ग के लोग पहुँचे युवा ऊधमी संगोष्ठी में

दल्लीराजहरा – नई दिल्ली में राजनीति की पाठशाला (गैर राजनीतिक संस्था) द्वारा आयोजित युवा ऊधमी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जहां देशभर के नए ऊधमी को उनके कार्य के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित लोगो को आमंत्रित किया गया था। जिसमे विभिन्न पार्टी से आये नेताओं , उद्योगपतियों, प्रशासनिक अधिकारियों, प्रतिष्ठित वकीलों व बुद्धिजीवी वर्ग राजनीति की पाठशाला के मंच पर एकत्रित होकर नए उधमी के कार्यो की प्रशंसा कर उन्हें देश का गौरव बताया व युवाओं को ज्यादा से ज्यादा उद्योग स्थापित कर भारत देश को आर्थिक रूप से और अधिक मजबूती प्रदान करने का आह्वान किया। इस अवसर पर देशभर से आये युवा उधमियों का सम्मान किया गया साथ ही राजनीति की पाठशाला के छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में काम करने के लिए सम्मानित किया गया। इस सम्मान के लिए श्याम जायसवाल ने राजनीति की पाठशाला के संस्थापक अजय पाण्डे, सहसंस्थापक धीरज शर्मा, प्रोग्राम व प्लानिंग कमेटी के चेयरमैन रोमेश शर्मा, राजनांदगांव के पूर्व सांसद प्रदीप गांधी, अमित द्विवेदी, हरेंद्र दुबे, मौलिक दवे, राजबली मांझी, के साथ ही पूरे राजनीति की पाठशाला परिवार का आभार व्यक्त किया।

स्वच्छता को स्वाभाव में शामिल करने जागरूकता अभियान में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका-रिकेश सेन

वैशाली नगर महाविद्यालय में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा का हुआ समापन

भिलाई नगर । पूरे विश्व में वही देश सबसे आगे हैं, वही देश निरंतर प्रगति कर रहे हैं, वही देश लगातार तरक्की कर रहे हैं जो स्वच्छ हैं। इसलिए हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छता को लेकर पूरे देश में जागरूकता अभियान आज से 10 वर्ष पहले शुरू किया, अमूमन पहले लोग खाने पीने की वस्तुओं के रेपर कहीं भी फेंक दिया करते थे, चौक चौराहों पर कुड़ा करकट का ढेर दिखता था परंतु अब हम सभी डस्टबीन खोजते हैं। स्वच्छता को स्वाभाव बनाना है, स्वच्छता को लेकर हम सभी शपथ इसलिए ले रहे हैं क्योंकि एक दिन झाड़ू थाम लेने से सफाई नहीं हो सकती, स्वच्छ भारत का संकल्प पूरा नहीं होगा, जरूरत इस बात की है कि हम सभी स्वच्छता के प्रति जागरूक रहें और सतत लोगों को भी जागरूक करें। आज वैशाली नगर महाविद्यालय में विधायक रिकेश सेन ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उक्त बातें कहीं। आपको बता दें कि वैशाली नगर महाविद्यालय में 17 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर तक जारी स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम में विद्यार्थियों को स्वाभाव स्वच्छता एवं संस्कार स्वच्छता अभियान के लिए जागरुक करते हुए अनेक प्रकार की गतिविधियां की गई जिसमें चित्रकला प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, रामनगर से तालाब की सफाई, गोद ग्राम में महिलाओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते स्वच्छता संबंधी निन्शुल्क सेनेटरी पैड वितरण राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। इस 17 दिवसीय कार्यक्रम का आज वैशाली नगर महाविद्यालय में भव्य समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम हुआ जिसमें वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे।

5 लाख की लागत से कुसुमकसा बाजार में सीसी रोड का भूमिपूजन

कुसुमकसा क्षेत्र का बड़ा बाजार व्यापक सुविधा हेतु प्रयास जारी - जनपद सदस्य संजय बैस

बाजार परिसर को स्वच्छ, सुंदर व सुगम बनाया जा रहा -सरपंच शिवराम सिंदरामे

दल्लीराजहरा –ग्राम पंचायत कुसुमकसा में ग्राम पंचायत अपने 15 वे वित्त की राशि से सीसी रोड के लिए पांच लाख रुपए की लागत से बनने वाले सीसी रोड का भूमिपूजन जनपद सदस्य संजय बैंस ग्राम के सरपंच शिव राम सिंदरामे ने किया इस अवसर पर पूजा अर्चना कर संजय बैंस ने कहा की बाजार परिसर की गलियों में सीमेंटीकरण होने से बाजार परिसर स्वच्छ और सुंदर दिखेगा कुसुम बाजार इस क्षेत्र का सबसे बड़ा बाजार है आस पास के ग्रामीण जन भी इस बाजार में आते है बजार स्वच्छ और सुंदर दिखे इस उद्देश से हमारे ग्राम सरपंच काम करा रहे है इस सीसी सड़क बनने से दुकान लगाने वालो के साथ राहगीरों की भी समस्या का समाधान होगा सरपंच शिव राम सिंदरामे ने कहा की हमने हमारे पंचायत निधि से बजार परिसर के लिए राशि स्वीकृति किए है हमारा उद्देश्य बजार को स्वच्छ बनाने के लिए हम ये पहल किए है सीसी सड़क बनने से हम सबको अच्छा लगेगा इस कार्यक्रम में सभी अतिथियों का आभार उप सरपंच दीपक यादव ने किया। इस अवसर पर पंच निर्मला जगनाएक राजेंद्र पोटाई कृपा राम सिन्हा मोती राम सिन्हा आत्मा राम चुरेंद्र लोकेश सिन्हा सुरेंद्र मंडावी गोल्डी धनकर के साथ ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले ग्राम पंचायत, स्वच्छताग्रही हुए सम्मानित

भास्कर दूत

जांजगीर-चांपा / जिला प्रशासन द्वारा 17 सितंबर से चलाये स्वच्छता पखवाड़े के समापन वराष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत दिवस के रूप में मनाया गया । विदित हो कि स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा अन्तर्गत यह अभियान जिले में चलाया इस अवसर पर कलेक्टर श्री आकाश छिकारा ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्वच्छता न केवल हमारे परिवेश को साफ और सुंदर बनाए रखने का उद्देश्य है, बल्कि यह हमारे स्वास्थ्य, समाज और पर्यावरण के लिए अत्यंत आवश्यक है।जिला मुख्यालय स्थित ऑडिटोरियम में स्वच्छता ही सेवा के तहत 卐स्वच्छ भारत दिवस卐 सम्मान समारोह में कलेक्टर श्री आकाश छिकारा ने आगे कहा कि स्वच्छता न केवल शासन , नगरपालिका या सफाईकर्मियों का कार्य नहीं है, बल्कि हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने घर, गली, मोहल्ले, और शहर को स्वच्छ बनाए। उन्होंने कहा कि इस अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें। हम सब को स्वास्थ्य के प्रति एकजुट होकर काम करने की आवश्यता है। स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठाने आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए कार्यक्रम में आये महिलाओं को अपने परिवार के सभी सदस्यों का पंजीयन कराने कहा। इसके साथ ही कलेक्टर ने जिले में संचालित नवाचार कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं शासन की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ लेने की अपील की। जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री राघवेंद्र प्रताप सिंह और श्री गुलाब सिंह चंदेल ने कार्यक्रम को संबोधित किया।इस दौरान नवागढ़ जनपद के अध्यक्ष श्रीमती प्रीति देवी सिंह, अपर कलेक्टर श्री एसपी वैद्य,जिला पंचायत सभापति श्री गगन जयपुरिया,सीईओ जिला पंचायत श्री गोकुल रावटे , बड़ी संख्या में स्व सहायता समूह की महिलाएं उपस्थित थे।

कार्यक्रम में स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ठ विद्यालय शा. प्राथमिक शाला सोनडीह, अमलीपाली, शा. प्राथमिक शाला सिल्ली, शा. प्राथमिक शाला नवापारा-ब, शा. प्राथमिक शाला पीथमपुर, शा. प्राथमिक शाला लखुर्री को सम्मानित किया गया। शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला मड़वा से भागीरथी बरेठ और प्रेमेंद्र साहू , शासकीय प्राथमिक शाला पंतोरा से श्रेया सहित 31 विद्यालय के स्वच्छता नायक नायिकाओं को सम्मनित किया गया। इस दौरान कलेक्टर ने सभी को स्वच्छता शपथ भी दिलाई।

स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले 5 ग्राम पंचायत अमलीपाली, डुड़्गा, हरदी, जर्वे(च), दारंग स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले 5 स्वच्छाग्रही श्रीमती नीरा कुंभकार, श्रीमती यशोदा साहू, श्रीमती निर्मला भूपाल, श्रीमती हेमीन बाई, श्रीमती उत्तरी बाई भारद्वाज का सम्मान किया गया। इस अवसर पर विद्यालयों, विहान समूह व पंचायतों से आये लोगों ने स्वच्छता अभियान के दौरान किए गये कार्यों में आ रही अड़चनें उनका समाधान सहित सफलता की कहानी को साझा किया ।संचालन व्याख्याता श्री दीपक कुमार यादव ने किया ।

नगर गुंडरदेही में तहसीलदार कोमल ध्रुव ने हरी झंडी दिखाकर किया स्वच्छता अभियान रैली का शुभारंभ

कार्य म एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत MY भारत के तत्वाधान में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं नेहरू युवा केंद्र व सर्व विभाग द्वारा आयोजित स्वच्छता ही सेवा -2024 कार्यक्रम में स्वयंसेवको व कर्मचारी , अधिकारी द्वारा गुंडरदेही नगर में चलाया गया स्वच्छता अभियान

भास्कर दूत

गुण्डरदेही। 1अक्टूबर2024 को एसडीएम गुण्डरदेही द्वारा संचालित स्वच्छता अभियान के तहत श्री कोमल सिंह ध्रुव तहसीलदार व डॉ लीना? साहू जिला संगठक राष्ट्रीय सेवा योजना बालोद के नेतृत्व में नगर पंचायत गुण्डरदेही के मुख्य नगरपालिका अधिकारी के कर्मचारियों व स्वयंसेवकों के संयुक्त रैली निकालकर आज स्वच्छता ही सेवा -2024 जो 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक चलने वाले अभियान के तहत आज सर्व विभाग के माध्यम से वृहद रैली का आयोजन किया गया। तहसीलदार गुण्डरदेही कोमल ध्रुव ने हरी झंडी दिखाकर रैली का शुभारंभ किया। जनपद पंचायत गुण्डरदेही से धमतरी चौक होते हुए,बाजार स्थल से नगर पंचायत गुण्डरदेही प्रांगण तक आयोजित रैली में बाज़ार स्थल की प्रतिकात्मक साफ-सफाई कर नगर पंचायत गुण्डरदेही के संसाधनों के माध्यम से स्वच्छता संदेश जनमानस को दिया गया। श्री नितिन शर्मा युवा कार्यक्रम अधिकारी ने स्वच्छता संदेश के माध्यम से लोगों में उनके स्वभाव व संस्कार में स्वच्छता को डालने युवा पीढ़ी को प्रेरित किया। डा लीना साहू जो स्वच्छता अभियान में रासेयो के माध्यम से वृहद रूप से जुड़ी है, उन्होंने अपने संदेश में कहा कि जैसे पूर्व में खुले में शौच मुक्त अभियान ओडीएफ के माध्यम से चलाकर लोगों के व्यवहार परिवर्तन की एक नयी क्रांति लायी गयी, ठीक उसी प्रकार लोगों को रोगमुक्त करने के लिए सम्पूर्ण भारत में स्वच्छता के लिए क्रांतिकारी बदलाव की आवश्यकता है।

जन मुक्ति मोर्चा ने मनाया शहीद दिवस

10 हजार से अधिक मजदूर,किसान,युवा,महिलाएं शामिल हुई रैली में।

भास्कर दूत

दल्लीराजहरा – नये भारत के लिये सुन्दर और शोषण मुक्त छत्तीसगढ़ के स्वप्नदृष्टा, मजदूर किसानों के मसीहा शहीद कॉमरेड शंकर गुहा नियोगी जी को 28 सितंबर 1991 की रात भिलाई स्थित उनके निवास स्थान पर उद्योगपतियों के इशारों पर गोली मारकर हत्या कर दिया गया था।पूंजीपतियों के बनाये इस हत्यारी व्यवस्था में शहीद कॉमरेड शंकर गुहा नियोगी जी छत्तीसगढ़ में उदारीकरण, केन्द्रीकरण और वैश्वीकरण की ताकतों का विरोध करते हुये प्रथम शहीद हुये। नियोगी जी के हत्यारे उद्योगपति आज भी खुले आम घुम रहें है।इसी हत्यारी व्यवस्था के खिलाफ में जन मुक्ति मोर्चा द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी शहीद कॉमरेड शंकर गुहा नियोगी जी की शहादत दिवस पर 28 सितंबर दिन शनिवार को जन मुक्ती मोर्चा छत्तीसगढ़ द्वारा,देश भर के आदिवासी समाज की संस्कृतिक परम्पराओ, उनकी अस्मिता एवं सार्वजनिक सम्पत्तियों पर सैन्य बलों द्वारा किये जा रहे हमलों के विरोधी में जन प्रतिरोध रैली व आमसभा का आयोजन किया गया। इस जन प्रतिरोध रैली में दल्ली राजहरा व आस पास क्षेत्र के बालोद, मोहला मानपुर चौंकी, कांकेर, नारायणपुर, राजनांदगांव, जिले के छात्र युवा, बेरोजगार, किसान मजदूर, बुद्धि जीवी, के साथ हज्जारो आम जनता सम्मिलित हुए, इस रैली में शामिल होने के लिए लोग सुबह 10 बजे से जन मुक्ति मोर्चा कार्यालय पहुंचने लगे दूर दराज से आने वाले साथियों को जन मुक्ति मोर्चा छत्तीसगढ़ के प्रभारियों द्वारा खाना खिलाया गया और दोपहर 02:30 बजे जन प्रतिरोध रैली का आरम्भ जन मुक्ति मोर्चा छत्तीसगढ़ के कार्यालय से किया गया यह जन प्रतिरोध रैली नगर के मुख्य मार्ग से होकर पुराना बाजार महुआ चौक, शहीद वीर नारायण चौक, पहुंची जंहा पर छत्तीसगढ़ के वीर पुत्र शहीद वीर नारायण सिंग के मूर्ति पर फूल माला व रंग गुलाल लगा कर श्राध्नजली देने के बाद रैली आगे गुप्ता चौक पहुंची जंहा पर दल्ली राजहरा के मुस्लिम समाज के साथियों द्वारा पेय जल की व्यवस्था किया गया फिर रैली आगे नया बस स्टैण्ड शहीद शंकर गुहा नियोगी चौक, पहुंची जंहा कॉमरेड शंकर गुहा नियोगी जी को श्रद्धांजलि देने के बाद रैली आगे श्रम वीर चौक, जैन भवन चौक पहुंचा यहां पर भी दल्लीराजहरा मसीही संगठन के द्वारा भी पेय जल नास्ता की व्यवस्था रैली में आये हुए आम जनता के लिए किया गया।

नवरात्रि पर्व पर भारी वाहन करेंगे बाईपास का उपयोग

आगामी नवरात्रि पर्व के मद्देनजर सभी दुर्गोत्सव व गरबा समितियों, व्यापारियों की ली गई बैठक

भास्कर दूत

बालोद। पुलिस अधीक्षक एस.आर भगत के निर्देशन में व अति. पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार जोशी के मार्गदर्शन एवं जिला प्रशासन के द्वारा दुर्गोत्सव एवं गरबा समिति की बैठक ली जाकर उन्हें शांति पूर्ण तरीके से नवरात्रि पर्व मनाने दिशा निर्देश दिया गया।

रूट डायवर्सन, पार्किंग, समेत चार मुद्दों को लेकर दिए गए दिशा निर्देश

एसडीओपी बालोद देवांश सिंह राठौर ने उपस्थित लोगों का अभिवादन करते हुए बताया कि नवरात्रि पर्व के दौरान दुर्गोत्सव व गरबा समिति के द्वारा वालंटियर रखें, पार्किंग व्यवस्था पहले से चिन्हांकित करने अपील की गई, ताकि रोड में अव्यवस्थित गाड़ियां ना रहे। जो लोग अंदर गरबा करने जा रहे है उसको आइडेंटिफाई करने उनकी प्रॉपर चेकिंग हो। किसी भी प्रकार का कोई व्यक्ति चाकू या हथियार लेकर गरबा के अंदर ना प्रवेश करे। समिति द्वारा जारी किए गए पास का दुरुपयोग ना हो इसके लिए प्रवेश करने वालों की पहचान सुनिश्चित कर ले। इसके अलावा सभी आयोजन समिति अपने अपने आयोजन के लिए एसडीएम कार्यालय से अनिवार्य रूप से अनुमति ले लें।

दुर्गोत्सव समिति को बताया गया कि रात्रि 10 बजे के बाद ध्वनि विस्तारक यंत्र का उपयोग ना करे, नियमों का पालन करें दुर्गोत्सव समिति द्वारा जगराता सेवा गीत के साथ ला रहें हैं तो उसकी आने से पहले पुलिस को सूचना दें द्य गंगा मैया समिति झलमला आस्था का एक बड़ा केंद्र बिंदु होने से वहाँ भीड़ अधिक होती है, जिसके कारण रूट डाइवर्ट किया गया है। रूट डाइवर्ट के लिए झलमला चौक से सिवनी चौक को बंद रखा गया है जहाँ केवल श्रद्धालुगण आयेंगे, भारी वाहन झलमला से पाररास बाईपास का उपयोग करके राजनांदगांव और राजहरा की ओर जायेंगे साथ ही व्यापारी वर्ग से अनुरोध किया गया की इस समय में भीड़ भाड़ अधिक रहता है इसलिए सुबह 11 बजे से रात्रि 9 बजे तक अपना सामान दुकान में ला ले इसके बाद अगर मार्केट अन्दर बड़ी गाड़ियां दिखेगी तो चालानी कार्यवाही की जाएगी।

उक्त बैठक में बालोद एसडीएम, एसडीओपी, ट्रैफिक प्रभारी, सीएमओ, नगर पालिका अध्यक्ष बालोद जनपद सीईओ एवं गणमान्य नागरिक, पत्रकार बंधु, तथा दुर्गोत्सव गरबा समिति के सदस्य उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने ली शपथ

भास्कर दूत

बालोद। शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा जिला बालोद के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में नि स्वार्थ भाव से रक्तदान करने और जरूरतमंद लोगों को बिना की निस्वार्थ भाव से रक्तदान कर उनकी मदद करने और समय पर रक्तदान की कमी से उनका जीवन बचाने के लिए शपथ लिया।

प्रति वर्ष 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस मनाया जाता है। इसी कड़ी में भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय व हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग द्वारा संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से स्वयंसेवकों और अन्य आम लोगों में रक्तदान के प्रति फैली भ्रांतियों को दूर करने और रक्तदान के प्रति जागरूक करने के लिए जागरूक कार्यक्रम और शपथ दिलाकर स्वयं और अन्य लोगों को भी रक्तदान करने और रक्तदान के प्रति जागरूक करने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रदीप कुमार प्रजापति ने सभी राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को शपथ दिलाया। और कहा कि हम सबको जरूरतमंद लोगों की मदद और सेवा करने के लिए आगे आने की जरूरत है। ताकि सही समय पर रक्त की कभी से जूझते और दुर्घटना के समय रक्त की कमी से मृत्यु होने वाले लोगों का जीवन बच सकें। साथ ही इस माह अक्टूबर में रक्त परीक्षण एवं ब्लड ग्रुप जांच और स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया जाएगा। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से लगातार राष्ट्रहित और समाज हित में जागरूकता कार्यक्रम और सेवा कार्य किया जा रहा है। जिसमें मुख्य रूप से राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान रहा है।

दैनिक भास्कर दूत
हर ख़बर पर नज़र
दिल में छत्तीसगढ़
रायपुर, गुरुवार 03 अक्टूबर 2024

शारदीय नवरात्र आज से, देवी मंदिरों-में जलेंगे आस्था के जोत

मेले में 800 से अधिक पुलिसकर्मियों की लगाई गई ड्यूटी

भास्कर दूत

राजनांदगांव। तीन अक्टूबर से शुरू हो रहे शारदीय नवरात्रि पर्व की तैयारी पूरी कर ली गई है। इस मौके पर देवी मंदिरों में श्रद्धालुओं द्वारा मनोकामना ज्योति कलश प्रज्जवलित किए जायेंगे। साथ ही प्रमुख चौक-चौराहों पर माता दुर्गा की आकर्षक प्रतिमाओं की स्थापना की जाएगी।

12 अक्टूबर तक चलने वाले नवरात्र पर्व को लेकर शहर में मां दुर्गा की स्थापना के लिए पंडाल सजने लगे हैं। देवी मंदिरों में भी ज्योति कलश की स्थापना की तैयारी की जा चुकी है। नवरात्रि में शहर में गरबा का भी आयोजन होगा। साथ ही विविध धार्मिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी होगी। धर्म-कर्म से जुड़े समितियों की ओर से नई तरीकों साजो-सजावट की जा रही है। वहीं पंडालों में मां दुर्गा की मूर्ति स्थापना के लिए समितियों की ओर से व्यापक तैयारी की जा रही है। जस सेवा समितियां भी अपनी तैयारी में जुटी हुई हैं। नवरात्र के मौके पर मां बम्लेश्वरी के दर्शनार्थियों और पैदल यात्रियों की सेवा सत्कार के लिए समाजसेवी संस्थाओं और प्रशासन विशाल पंडालों को अंतिम रूप दियसा जा रहा है। शारदीय नवरात्रि पर्व पर जिले भर में भक्तिमय माहौल रहेगा। मंदिरों में आस्था की जोत जलाए जायेंगे। इस साल विशेष पूजा के लिए भी मंदिरों में व्यवस्था की गई है। प्रथम दिवस, पंचमी और अष्टमी में मंदिरों में विशेष पूजा के लिए बुकिंग भी की गई है। मां बम्लेश्वरी के अलावा जिलेभर के बड़े देवी मंदिरों में क्वार नवरात्रि को लेकर तैयारी पूर्ण हो गई है।

करेला स्थित भवानी मंदिर, सिंघोला की मां भानेश्वरी मंदिर और स्थानीय शीतला मंदिर में भी ज्योति कलशों की स्थापना की जाएगी। मां दुर्गा की विशेष आराधना की जाएगी। शहर समेत जिलेभर के अन्य इलाकों के प्रतिमा पंडालों में मां दुर्गा की प्रतिमा भक्तिमय माहौल में स्थापित की जाएगी। मंदिरों में भी ज्योति कलश की जलाए जायेंगे, जिसकी तैयारी जारी है।

डोंगरगढ़ मेले में रहेगी जवानों की नजर

तीन अक्टूबर गुरूवार से शुरू हो रहे क्वांर नवरात्रि पर धर्मनगरी डोंगरगढ़ में लगने वाले मेले में लोगों की सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर इस बार 800 से अधिक जवानों की ड्यूटी लगाई गई है। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन में क्वांर नवरात्रि पर्व डोंगरगढ़ मेला ड्यूटी में तैनात जवानों को ब्रीफ कर ड्यूटी वितरण किया गया। इसके साथ ही नवरात्रि के पूरे नौ दिनों तक अंजोरा बायपास से डोंगरगढ़ मेला स्थल तक यातायात सुरक्षा व्यवस्था हेतु जवानों को तैनात किया गया है। डोंगरगढ़ मेले में दर्शनार्थियों की सुरक्षा व्यवस्थ में 20 चारपहिया वाहन पेट्रोलिंग, 15 मोटरसायकल पेट्रोलिंग पार्टी, 15 पैदल पेट्रोलिंग पार्टी, मेला ड्यूटी के दौरान यातायात व्यवस्था में 300 बल तैनात कर यात्रियों के लिए 10 जगहों पर पार्किंग की व्यवस्था की गई है। नीचे मंदिर से उपर मंदिर तक एवं विभिन्न चौक चौराहों में फिक्स पिकेट बल तैनात किया गया है। यात्रियों को सुचारू रूप से दर्शन कराने एवं सुरक्षा प्रदान करने हेतु ऊपर मंदिर गर्भगृह, रोपवे नीचे एवं ऊपर, ऊपर मंदिर से नीचे तक सीढ़ी में सुरक्षा व्यवस्था, क्षीरपानी में प्रवेश द्वारा से ड्रापगेट एवं रोपवे तक, गोताखोर पार्टी, बूढ़ादेव मंदिर सुरक्षा व्यवस्था के साथ ही क्षीरपानी में पुलिस कंट्रोल रूम बनाया गया है।

ज्ञात हो कि तीन अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक मां बम्लेश्वरी डोंगरगढ़ क्वांर नवरात्रि का पर्व मनाया जायेगा। इस दौरान डोंगरगढ़ में मां बम्लेश्वरी के दर्शन हेतु श्रद्धालुगण लाखों की संख्या में आने की संभावना है। इस दौरान कानून एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने एवं सम्पूर्ण नवरात्रि पर्व को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से अलग-अलग जिलों का बल बुलाया गया है, जिसमें पुलिस जिला बल, सीएएफ, होम गार्ड, यातायात पुलिस शामिल हैं। सम्पूर्ण मेला व्यवस्था को चार सेक्टर में बांटा गया है, जिसमें लगभग 800 से अधिक पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है।

शारदीय नवरात्रि आज से और शहर में सर्वत्र गंदगी!

मंदिरों में हो रही विशेष सफाई, लेकिन निगम को शहर की सुंदरता की परवाह नहीं

राजनांदगांव (भास्कर दूत)। तीन अक्टूबर गुरूवार से शारदीय नवरात्रि पर्व शुरू हो रहा है। इसकी तैयारी में लोग अपने घरों-प्रतिष्ठानों की विशेष सफाई कर रहे हैं। नगर के चौक-चौराहों में दुर्गा, काली, सरस्वती आदि देवी माताओं की प्रतिमाएं विराजेंगी। उनके स्वागत में नगर निगम प्रशासन को शहर की विशेष सफाई का ध्यान रखा जाना चाहिए था, लेकिन नहीं रखा गया है। उल्टे सामान्य दिनों की तुलना में शहर में और ज्यादा गंदगी पसरने लगी है। इससे ऐसा लगता है कि निगम प्रशासन को नागरिकों की सफाई जैसी मूलभूत समस्याओं की कोई चिंता ही नहीं है। राज्य शासन द्वारा पूरे राज्य में स्वच्छता मुहिम चलाने के बाद भी शहर की सफाई व्यवस्था की ऐसी दुर्दशा बनी हुई है। दूसरी ओर निगम प्रशासन है कि स्वच्छता अभियान महज कागजों और प्रदर्शनी में चला रहा है, लेकिन धरातल में हकीकत कुछ और नजर आ रही है।

तीन दिन पहले यानि 30 सितंबर को आयोजित नगर निगम की अंतिम सामान्य सभा में शहर की गलियों, सड़कों और नाले-नालियों की सफाई का विषय नगर निगम की सत्ता में आसीन कांग्रेस और विपक्षी दल भाजपा के पार्षदों के लिए दूसरे दर्जे का रहा, जबकि स्वास्थ्य से जुड़े इस विषय पर गहन चिंतन की जानी चाहिए थी। शहर की सफाई को लेकर न सिर्फ महापौर, अध्यक्ष समेत कांग्रेस-भाजपा के सभी पार्षदों को इस विषय पर फोकस करके चर्चा करनी चाहिए थी, लेकिन सामान्य सभा में नागरिकों की इस तरह की बुनियादी समस्याओं और सुविधाओं पर चर्चा अंत तक तथा दूसरे दिन शेष विषयों पर चर्चा के बावजूद गौण बनी रही।

निगम चुनाव में जनता नकार दे तो आश्चर्य नहीं

आगामी दिनों में प्रदेश भर में नगरीय निकायों का चुनाव होना है, जिसमें राजनांदगांव नगर निगम में भी कांग्रेस-भाजपा के बीच वर्चस्व की लड़ाई होनी है, लेकिन दोनों ही पार्टी के नेता जनता के मुद्दों पर इसी तरह लापरवाह बने रहे तो बाजी किसी तीसरे के हाथ लग सकती है? यदि वह प्रत्याशी अपने मोहल्ले की समस्याओं को हल करने की दिशा में जरा भी प्रयास कर रहा हो जनता देख रही है कि कांग्रेस-भाजपा के स्थानीय नेता आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति में ही उलझे हुए हैं और जनता के हित में जमीनी तौर पर जो काम उन्हें करने चाहिए उनमें रुचि कम दिखा रहे हैं।

सफाई ठेका वाले वार्डों में गड़बड़ी- शिव वर्मा

इस संबंध में वरिष्ठ भाजपा पार्षद शिव वर्मा ने कहा कि शहर में नवरात्रि को ध्यान में रखते हुए विशेष सफाई नहीं की जा रही है। राज्य शासन के निर्देश पर स्वच्छता सेवा पखवाड़ा के तहत जरूर कुछ स्थानों पर नागरिकों को स्वच्छता का संदेश देते हुए सफाई की जा रही है। उन्होंने अपने वार्ड में निगम के सफाई कर्मियों द्वारा की जा रही सफाई पर संतोष व्यक्त किया और कहा कि जिन वार्डों में सफाई का ठेका दिया गया है, उनमें से कुछ में जरूर गड़बड़ होने की जानकारी मिल रही है। शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर स्वच्छता निरीक्षक राजेश मिश्रा को भी डायल किया गया, लेकिन उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

गोल बाजार में भारी गंदगी रानीसागर कचरा से पटा

शहर के मुख्य फल सब्जी बाजार गोल बाजार में नियमित और ठीक तरह सफाई नहीं होने से वहां भारी गंदगी बदबू व्याप्त है, जिससे फुटकर व्यवसायियों सहित ग्राहकों की सेहत से लगातार खिलवाड़ हो रहा है। शहर के ऐतिहासिक रानी सागर में इतना कचरा और गंदगी व्याप्त है कि कई ट्रिप कचरा निकल सकता है। लोग पूजन सामग्रियां वहीं उड़ेल रहे हैं। शहर के लगभग सभी वार्ड में कमोबेश इसी तरह की गंदगी का आलम है। नागरिक दायित्वों का भी अभाव बना हुआ है। लोग नाले-नालियों में कचरा फेंक रहे हैं। शहर में यथा राजा तथा प्रजा वाली उक्ति चरितार्थ हो रही है।

शहर में भारी गंदगी; फैल रहा पीलिया- ऋषि शास्त्री

कांग्रेस पार्षद दल के प्रवक्ता एवं राजीव नगर बसंतपुर वार्ड के पार्षद ऋषि शास्त्री ने कहा कि शहर की सफाई जिस तरीके से होनी चाहिए, उसे तरीके से नहीं हो रही है। आज गांधी जयंती पर और इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन से सभी 51 वार्ड में विशेष सफाई अभियान चलाया गया, लेकिन जिस तरीके से चलना चाहिए था, वैसे नहीं चला, बल्कि सिर्फ फोटो खींचवाने के लिए यह मुहिम चलाई जा रही है। श्री शास्त्री ने बताया कि उन्होंने राजाओं के समय के बूढ़ासागर और रानीसागर तालाब की विशेष सफाई के लिए निगम को पत्र लिखा था कि उक्त तालाब राजगामी की संपत्ति है और मछली पालन के लिए ठेके पर दिया जाता है तो उसकी सफाई की जिम्मेदारी भी राजगामी संपदा न्यास की होनी चाहिए। पार्षद शास्त्री ने यह भी कहा कि शहर अनेक वार्ड में पीलिया फैल रहा है। यदि उनके राजीव नगर वार्ड में भी ऐसा होता है तो जिम्मेदारी निगम आयुक्त की होगी।

आपसी गुटबाजी से नहीं उबर पा रहे शहर के कांग्रेसी

राजनांदगांव (भास्कर दूत)। एक सुप्रसिद्ध कहावत है- रस्सी जल गई पर ऐंठन नहीं गई, कुछ ऐसा ही हाल है शहर के कांग्रेस नेताओं का। प्रदेश में सरकार रहते हुए भी एकजुट नहीं हो पाए और आज सत्ता से बेदखल होने के बाद भी कांग्रेसी आपसी गुटबाजी से नहीं उबर पाए हैं। जबकि कहावत तो यह भी प्रसिद्ध है कि दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है। आशय यही है कि किसी भी घटनाक्रम से यदि परिणाम अपने पक्ष में नहीं आ रहा है तो होना तो यही चाहिए कि उससे सबक लेकर ऐसा कुछ करें कि दोबारा उसी तरह का नकारात्मक नतीजा न आने पाए।

सर्वविदित है कि भूपेश सरकार के दौरान भी शहर सहित जिले में कांग्रेस में गुटबाजी चरम पर रही। इस विषय को लेकर भास्कर दूत प्रमुखता से समाचार का प्रकाशन कर पार्टी के आला नेताओं का ध्यान भी आकृष्ट करा चुका है, लेकिन गुटबाजी को खत्म करने के लिए किसी भी बड़े नेता ने कोई प्रयास नहीं किया और विधानसभा चुनाव से पहले से लेकर चुनाव संपन्न होने तक की स्थिति में जबर्दस्त खेमेबाजी चलती रही, जिसका नतीजा यह हुआ कि भूपेश सरकार की प्रदेश से विदाई हो गई। उसके बाद लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस का वही हश्र हुआ। इस तरह दो-दो बार झटका मिलने के बाद भी कांग्रेस नेता हैं कि आपस में ही पार्टी नेताओं की आंखों की किरकिरी बने हुए हैं और अपनी ढपली, अपना राग की तर्ज पर नेतागिरी कर अपना उल्लू सीधा करने में मशगुल हैं।

इन तमाम बातों का जिक्र यहां इसलिए करना पड़ रहा है कि अब आगामी दो-ढाई माह के भीतर नगरीय निकाया का चुनाव होना लगभग तय है। अभी नगर निगम राजनांदगांव में कांग्रेस सत्ता में है। कांग्रेस नेत्री हेमा देशमुख महापौर पद पर काबिज हैं, किंतु उनके पांच सालों के कार्यकाल पर नजर डालें तो पार्टी की गुटबाजी को खत्म करने की दिशा में कोई ठोस पहल ही नहीं की गई। यहां तक उनके अपने एमआईसी मेंबर भी उनसे नाराज चलते रहे और कांग्रेस के कई पार्षदों की भी महापौर के साथ आज तक पटरी नहीं बैठ पाई। इस तरह यहां कांग्रेस के अंतर्कलह ने भाजपा को विधानसभा चुनाव में भी फायदा पहुंचाया और लोकसभा चुनाव में भी। अब बारी नगरीय निकाय चुनाव की है। दो-दो बार भाजपा पटखनी मिलने के बाद भी कांग्रेस के पदाधिकारियों और निर्वाचित जनप्रतिनिधियों ने सबक नहीं ली है। कहते हैं न एक-एक कप दूध अलग-अलग रहे तो उससे न दही जमेगी और न मलाई निकलेगी और न ही घी बनेगा। कांग्रेस पता नहीं क्यों इस बात को भूल रही है, जबकि भाजपा इस बात को अच्छी तरह समझते हुए सांगठनिक मजबूती पर गंभीरता से ध्यान देती आ रही है। नगर निगम चुनाव जीतने की उनकी ठोस रणनीति बनकर तैयार है।

निगम चुनाव में भाजपा को फिर हो सकता है फायदा?

एकला चलो के सिद्धांत पर चल रहे कांग्रेसी

कांग्रेस के अंतर्कलह और उनके वरिष्ठ नेताओं के एकला चलो के सिद्धांत का एक उदाहरण यह भी सामने आया है कि बीते दिनों प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री शाहिद भाई ने मेडिकल कॉलेज की शिक्षा और मेडिकल कॉलेज की दुर्दशा सुधारने के लिए राज्यपाल के नाम कलेक्टर को ज्ञापन दिया। इस दौरान उन्होंने पार्टी के इकलौते नेता को ही साथ में लिया और किसी को नहीं, जबकि उन्हें जनहित के इस बड़े मुद्दे पर शहर कांग्रेस और जिला कांग्रेस संगठन के पदाधिकारियों को साथ में लेकर चलना था, किंतु सबको अपनी लकीर बड़ी करने की चिंता है, पार्टी संगठन की मजबूती से ऐसे नेताओं को सरोकार नहीं रह गया है। बस एक काम रह गया है पार्टी नेता होने कालेबल लगाओ और अखबारों की सुर्खियों में बने रहने के लिए नेतागिरी करते रहो। बात सिर्फ शाहिद भाई की ही नहीं है, बल्कि कांग्रेस के अन्य नेता भी इसी तरह एकला चलो के सिद्धांत पर काम करते हुए संगठन को कमजोर बनाने में लगे हुए हैं। इसका परिणाम आने वाले निगम चुनाव में कांग्रेस के लिए नुकसानदेह हो सकता है और पक्के तौर पर हो सकता है। कांग्रेस की यही फूट नगर निगम में विपक्षी दल भाजपा के लिए निगम में सत्ता वापसी का मार्ग प्रशस्त कर रही है। सनद रहे कि नगर निगम चुनाव 2019 में कांग्रेस ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था और मौजूदा समय में उनके 32 पार्षद हैं, जबकि 2019 से पहले निगम की सत्ता में रही और भाजपा महज 19 वार्ड में फतह कर पाई थी। अब जबकि राज्य में भाजपा की सरकार है, ऐसे में कांग्रेस के नेताओं को आपसी गुटबाजी को छोड़कर एकजुटता का परिचय देना ही होगा, वरना जनता तो देख ही रही है कि कांग्रेसियों में किस तरीके से आपसी घमासान मचा हुआ है?

महान विभूतियों के व्यक्तित्व को आत्मसात करना ही सच्ची श्रद्धांजलि

शहर कांग्रेस ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री शास्त्री को दी श्रद्धांजलि

राजनांदगांव (भास्कर दूत)। अंहिसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की जयंती पर बुधवार दो अक्टूबर को कांग्रेस भवन में शहर कांग्रेस अध्यक्ष के निर्देशन पर संगोष्ठी सभा आयोजित कर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तत्पश्चात कांग्रेस जनों ने पुराना बस स्टैंड में स्थित महात्मा गांधी जी की आदमकद प्रतिमा में माल्यार्पण किया।

शहर कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर सिंह छाबड़ा के निर्देशन में अंहिसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर के तैलचित्र पर कांग्रेसजनों द्वारा माल्यार्पण कर संगोष्ठी सभा की शुरूआत की। सभा को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री धनेश पाटिला ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश की आजादी में अग्रिम भूमिका निभाई और उनके नेतृत्व में सफलता मिली। निरू संदेह महात्मा गांधी के जीवन त्याग, तपस्या और बलिदान से भरा पड़ा है। गांधी जी ने सत्य और अहिसा के मार्ग पर चलकर अंग्रेजी हुकुमत से लड़े और देश को आजाद कराया। आज हम उनके बताए मार्ग व आदर्शों पर चलकर उनके व्यक्तित्व को आत्मसात करने की जरूरत है।

इसी तरह जय जवान, जय किसान का अलख जगाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री पंडित लालबहादुर शास्त्री को नमन किया गया। पंडित शास्त्री, जिनके जीवन को ही सादगी माना जाता है, जब देश में खाद्यान संकट का दौर आया तो देशवासियों से सप्ताह में एक दिन उपवास रखने की अपील कर लोगों को एक नई राह दिखाई।

प्रिसिशन इंजी वर्क्स
स्टील अलमारी, स्ट्रोंग रूम गेट
सभी तरह के फेब्रीकेशन वर्क किया जाता है।
पता : इण्डस्ट्रियल एरिया, जी.ई.रोड़, राजनांदगांव
मो.9406011669

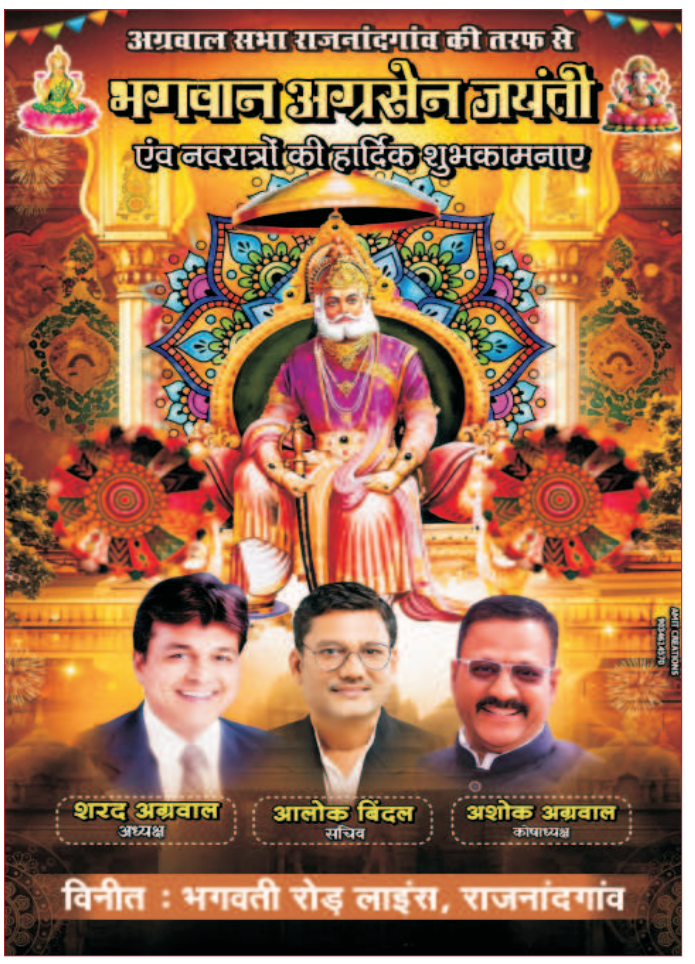

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक- **दुष्यन्त दास** द्वारा 602, अशोका रत्न, ब्लॉक नं. 14, 6th फ्लोर शंकर नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं छत्तीसगढ़ प्रिंटर्स एन्ड पब्लिशर्स, अनंत विहार कॉलोनी, दलदल सिवनी मार्ग, मोवा-रायपुर (छत्तीसगढ़) से मुद्रित । मो. 9406242401, (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र रायपुर न्यायालय होगा)। Email- bhaskardootraipur1@gmail.com